CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2017 with Solution PDF-Set 2/1/2 - Compartment

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 5, 6, 7, 8 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

पग-पग पर चौराहे मिलते हैं,
बाँहें फैलाए रोज़ मिलती हैं सौ राहें,
शाखा-प्रशाखाएँ निकलती रहती हैं,
नव-नवीन रूप-दृश्य वाले सौ-सौ विषय
रोज-रोज मिलते हैं .....
और, मैं सोच रहा हूँ कि
जीवन में आज के
लेखक की कठिनाई यह नहीं कि
कमी है विषयों की
वरन् यह है कि आधिक्य उनका ही
उसको सताता है,
और, वह ठीक चुनाव नहीं कर पाता है। [5 अंक]

1(क). कैसे कह सकते हैं कि यह काव्यांश किसी भी लेखक की समस्या से संबंधित है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में लेखक की कठिनाई को सीधे पहचानना आवश्यक है।
- समस्या विषयों की कमी और उनकी अधिकता के अंतर से स्पष्ट होती है।

चरण 1: प्रसंग की पहचान कवि स्वयं आज के लेखक की कठिनाई पर विचार करता है। उसके सामने जीवन के अनेक नए रूप, दृश्य और विषय निरंतर आते हैं। इसलिए यहाँ वर्णित स्थिति लेखन के लिए विषय चुनने से जुड़ी है।

चरण 2: निर्णायक संकेत काव्यांश में कहा गया है कि लेखक को विषयों की कमी नहीं, उनका आधिक्य सताता है। अनेक संभावनाओं के बीच वह ठीक चुनाव नहीं कर पाता। यही उलझन किसी भी लेखक के सामने आ सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष यह काव्यांश किसी भी लेखक की समस्या से संबंधित है, क्योंकि इसमें अनेक उपलब्ध विषयों में से लेखन के लिए उपयुक्त विषय न चुन पाने की कठिनाई व्यक्त हुई है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में विषयों की अधिकता और उचित चयन की कठिनाई, दोनों को साथ लिखिए।

1(ख). समस्या की विकरालता को कवि ने किस रूप में देखा है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-बिंबों के माध्यम से समस्या का विस्तार समझना इस प्रश्न का आधार है।
- बार-बार आने वाले अवसर और बढ़ती संभावनाएँ चयन की उलझन बढ़ाती हैं।

चरण 1: बिंबों को पहचानिए कवि को पग-पग पर चौराहे और प्रतिदिन सौ राहें मिलती दिखाई देती हैं। साथ ही शाखाएँ-प्रशाखाएँ तथा सौ-सौ नए विषय सामने आते रहते हैं। ये बिंब विकल्पों की असंख्य और लगातार बढ़ती संख्या बताते हैं।

चरण 2: समस्या से संबंध हर विषय से नए विषय निकलते रहने के कारण लेखक की कठिनाई घटने के बजाय बढ़ती है। किस राह या विषय को चुना जाए, इसका निर्णय कठिन हो जाता है। इस तरह बहुतायत ही समस्या का विकराल रूप बन जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने समस्या की विकरालता को हर कदम पर मिलने वाले चौराहों, सौ राहों और निरंतर निकलती शाखाओं-प्रशाखाओं

के रूप में देखा है। ये विषयों की अत्यधिक बहुलता के प्रतीक हैं।

त्वरित सुझाव: समस्या का रूप बताते समय चौराहे, सौ राहें और शाखाएँ-प्रशाखाएँ जैसे मूल बिंब लिखिए।

1(ग). शाखाएँ-प्रशाखाएँ से कवि का क्या आशय है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शब्दों का अर्थ काव्यांश के विषय-चयन वाले प्रसंग में करना चाहिए।
- शाखा-प्रशाखा का बिंब एक संभावना से निकलती अनेक संभावनाएँ बताता है।

चरण 1: शाब्दिक बिंब पेड़ की एक शाखा से कई छोटी शाखाएँ निकलती हैं। इसी प्रकार कवि के सामने आने वाला कोई एक विषय अनेक संबंधित विषयों और विचारों को जन्म देता है। यहाँ वृक्ष का वर्णन उद्देश्य नहीं है।

चरण 2: प्रसंगगत आशय नए रूपों और दृश्यों वाले विषय रोज सामने आते हैं और उनसे आगे भी विषय निकलते रहते हैं। इस विस्तार से लेखक के सामने चुनाव के लिए विकल्प बढ़ जाते हैं। अतः शाखाएँ-प्रशाखाएँ विषयों की बढ़ती विविधता की ओर संकेत करती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष शाखाओं-प्रशाखाओं से कवि का आशय एक विषय से निकलते अनेक नए विषयों, विचारों और लेखन की संभावनाओं से है, जो लेखक की चयन-संबंधी उलझन बढ़ाते हैं।

त्वरित सुझाव: प्रतीक का अर्थ बताते समय उसे काव्यांश के केंद्रीय विषय, अर्थात् विषय-चयन, से जोड़िए।

1(घ). "पग-पग चौराहे मिलते हैं बाँहें फैलाए" का भाव स्पष्ट कीजिए [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भावार्थ में बिंब का जीवन और लेखन से संबंध स्पष्ट करना आवश्यक है।
- चौराहा चयन की स्थिति और बाँहें फैलाना आकर्षण अथवा आमंत्रण का संकेत है।

चरण 1: चौराहे का संकेत जीवन में हर कदम पर लेखक को अनेक दिशाएँ और विषय उपलब्ध होते हैं। चौराहे की तरह प्रत्येक स्थिति उसके सामने अलग-अलग रास्ते खोलती है। उसे आगे बढ़ने के लिए इनमें से किसी एक दिशा का चुनाव करना पड़ता है।

चरण 2: आमंत्रण का भाव बाँहें फैलाए मिलने वाली राहें बताती हैं कि ये विषय लेखक को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। हर विषय लिखे जाने का अवसर देता है। अनेक आकर्षक विकल्प एक साथ होने पर उचित विषय का निर्णय कठिन हो जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का भाव है कि लेखक के सामने जीवन के प्रत्येक मोड़ पर अनेक आकर्षक विषय और दिशाएँ उपस्थित होकर उसे आमंत्रित करती हैं; इसलिए किसी एक उपयुक्त दिशा का चुनाव कठिन हो जाता है।

त्वरित सुझाव: भावार्थ में चौराहे को अनेक विकल्प और बाँहें फैलाने को आकर्षक आमंत्रण से जोड़िए।

1(ङ). लेखक विषय का चुनाव ठीक से क्यों नहीं कर पाता? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि द्वारा बताए कारण को उसी के शब्द-संकेतों से समझना चाहिए।
- यहाँ अभाव नहीं, अत्यधिक उपलब्धता चुनाव की कठिनाई का कारण है।

चरण 1: कारण पहचानिए काव्यांश में स्पष्ट है कि लेखक के पास विषयों की कमी नहीं है। उसे रोज नए रूप और दृश्य वाले सौ-सौ विषय मिलते हैं। साथ ही एक विषय से अनेक अन्य विषय निकलकर विकल्पों की संख्या और बढ़ा देते हैं।

चरण 2: चुनाव पर प्रभाव इतने अधिक विषयों और संभावित दिशाओं के बीच लेखक उलझ जाता है। वह तय नहीं कर पाता कि किस विषय को लेखन का आधार बनाए। कवि इसी स्थिति को विषयों का आधिक्य लेखक को सताने के रूप में व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक विषय का ठीक चुनाव इसलिए नहीं कर पाता कि उसके सामने नए और आकर्षक विषयों की अत्यधिक बहुलता है। अनेक विकल्पों के बीच उसकी चयन-क्षमता उलझ जाती है।

त्वरित सुझाव: कारण लिखते समय कमी के स्थान पर आधिक्य लिखिए; यही काव्यांश का निर्णायक अंतर है।

---

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

भारत का हृदय गाँवों में बसता है। यहीं पर सेवा और परिश्रम के अवतार किसान रहते हैं, जो हम सब के अन्नदाता और सम्पूर्ण सृष्टि के पालक हैं। किसान का नाम आते ही हमारी आँखों के सामने एक ऐसे असहाय और दयनीय व्यक्ति की छबि घूमने लगती है जिसकी आँखों में निराशा का अँधेरा दिखाई देता है किन्तु होता है वह परिश्रमी एवं स्वाभिमानी व्यक्तित्व का धनी व्यक्ति। उसकी दुरवस्था के लिए वह खुद भी जिम्मेदार है जिसके अनेक कारण हैं। अशिक्षा के कारण वह न तो अपने अधिकारों की ओर जागरूक है और न वर्तमान तकनीकी विकास की ओर ही उसका ध्यान जा पाता है। परिणामतः उसकी पैदावार प्रभावित होती है और उसे अपने उत्पादन का उचित मूल्य भी नहीं मिल पाता। अत्यन्त अल्पमूल्य में वह अपना बहुमूल्य परिश्रम साहूकार अथवा सरकार के हाथ सौंप देता है और वह सदैव फटेहाल ही रह जाता है।

इसके साथ-साथ किसानों के किसी संगठन का अभाव भी उसके विकास में सबसे बड़ा बाधक है। वह अपने खून-पसीने की गाढ़ी कमाई को आपसी झगड़े-झंझट की बलि चढ़ा देता है। दादा की पुश्तैनी रंजिश पोते तक और उससे आगे तक चलती रहती है। फलतः कोर्ट-कचहरी उसके परिश्रम को खा जाती हैं। इन सबके साथ-साथ सरकारी योजनाओं के केन्द्र प्रायः नगर ही रहते हैं। जहाँ से किसान का कोसों दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं रहता। फलतः कुछ मुट्ठी भर लोग ही उसका लाभ उठाते रहते हैं और वह दीन-हीन किसान अपनी दुरवस्था पर आँसू बहाता रहता है। इन सबके अतिरिक्त अंधविश्वासी परम्परावादी होना भी उसके लिए अभिशाप होता है।

पूँजी का अभाव किसान की सनातन समस्या है। बीज, खाद, उपकरण खरीदने की क्षमता प्रायः उसके पास नहीं होती और वह या तो साहूकार की ओर मुँह करता है या बैंकों की ओर। फँसता वह दोनों ओर है। यदि किन्हीं प्राकृतिक या मानवी कारणों से फसल मारी गई तो ऋण-वसूली में न साहूकार दया करता है, न बैंक। उसका आधार नहीं रहता, उसके पैरों तले की ज़मीन खिसक जाती है और उबरने का कोई रास्ता न देखकर वह आत्महत्या करने को विवश हो जाता है। 'ग्रामदेवता', 'अन्नदाता' जैसे विशेषण उसकी हँसी उड़ाते हैं। [15 अंक]

2(क). अशिक्षित होने से किसान को क्या-क्या हानियाँ होती दिखाई पड़ती हैं? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के आधार पर कारण और उसके परिणामों का क्रम बनाना आवश्यक है।
- किसान की अधिकारों तथा तकनीक संबंधी अनभिज्ञता उसकी आय को प्रभावित करती है।

चरण 1: जानकारी और जागरूकता का अभाव अशिक्षा के कारण किसान अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं हो पाता। उसका ध्यान वर्तमान तकनीकी विकास की ओर भी नहीं जाता। इसलिए वह उपलब्ध नई जानकारी तथा खेती की उन्नत तकनीकों का लाभ नहीं उठा पाता। गद्यांश इन दोनों कमियों को उसकी दुरवस्था से जोड़ता है।

चरण 2: उत्पादन और मूल्य पर प्रभाव तकनीकी विकास से दूर रहने के कारण किसान की पैदावार प्रभावित होती है। अधिकारों के प्रति जागरूक न होने से उसे अपने उत्पादन का उचित मूल्य भी नहीं मिल पाता। परिणामतः वह अपने बहुमूल्य परिश्रम का फल बहुत कम दाम पर साहूकार अथवा सरकार को सौंप देता है और निर्धन बना रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष अशिक्षित किसान अपने अधिकारों और आधुनिक कृषि-तकनीक से अनजान रहता है। इससे उसकी पैदावार प्रभावित होती है और उपज का उचित मूल्य नहीं मिलता; वह कम दाम पर अपना उत्पादन बेचकर फटेहाल बना रहता है।

त्वरित सुझाव: अशिक्षा से अनभिज्ञता, फिर पैदावार और मूल्य की हानि तक का कारण-परिणाम क्रम लिखिए।

2(ख). किसान के मार्ग की दो कठिनाइयों का विवेचन कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में दो कठिनाइयों का विवेचन अपेक्षित है, इसलिए प्रत्येक का प्रभाव बताना चाहिए।
- उत्तर गद्यांश में उल्लिखित समस्याओं पर ही आधारित रहना चाहिए।

चरण 1: पहली कठिनाई: पूँजी का अभाव किसान के पास बीज, खाद और खेती के उपकरण खरीदने के लिए पर्याप्त धन नहीं होता। आवश्यक खर्च जुटाने के लिए उसे साहूकार अथवा बैंक से ऋण लेना पड़ता है। यदि प्राकृतिक या मानवीय कारणों से फसल नष्ट हो जाए, तो आय का आधार समाप्त हो जाता है, पर ऋण-वसूली का दबाव बना रहता है।

चरण 2: दूसरी कठिनाई: संगठन का अभाव और आपसी रंजिश किसानों के संगठन का अभाव उनके विकास में बाधक है। इसके साथ आपसी झगड़े और पीढ़ियों से चली आ रही दुश्मनी उनकी कठिनाइयाँ बढ़ाती हैं। मेहनत की कमाई खेती तथा परिवार के विकास में लगने के बजाय कोर्ट-कचहरी में खर्च होती रहती है। इस प्रकार सामाजिक बिखराव आर्थिक उन्नति को रोकता है।

चरण 3: निष्कर्ष किसान की दो प्रमुख कठिनाइयाँ पूँजी की कमी तथा संगठन के अभाव से जुड़ी आपसी रंजिश हैं। पहली उसे ऋण के दबाव में डालती है, जबकि दूसरी उसकी मेहनत की कमाई मुकदमेबाजी में नष्ट करती है।

त्वरित सुझाव: दो कठिनाइयाँ चुनकर हर एक के साथ उसका ठोस दुष्परिणाम अवश्य जोड़िए।

2(ग). पुश्तैनी रंजिश का क्या तात्पर्य है? इसका दुष्परिणाम लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शब्दार्थ और गद्यांश में उसका परिणाम, दोनों भागों का उत्तर देना चाहिए।
- पीढ़ियों से चलने वाला वैर किसान की आर्थिक हानि से जुड़ा है।

चरण 1: पुश्तैनी रंजिश का अर्थ पुश्तैनी रंजिश से आशय पूर्वजों के समय से चली आ रही दुश्मनी या मनमुटाव है। नई पीढ़ी भी पुरानी शत्रुता को समाप्त करने के बजाय आगे बढ़ाती रहती है। गद्यांश में दादा की रंजिश का पोते और उससे आगे तक चलना इसी स्थिति को स्पष्ट करता है। यह कोई क्षणिक विवाद नहीं, बल्कि पीढ़ियों तक बना रहने वाला वैर है।

चरण 2: रंजिश का दुष्परिणाम ऐसी रंजिश के कारण आपसी झगड़े और मुकदमे चलते रहते हैं। किसान अपने खून-पसीने की गाढ़ी कमाई कोर्ट-कचहरी के चक्कर में खर्च कर देता है। फलतः उसके परिश्रम का लाभ खेती या परिवार के विकास तक नहीं पहुँचता। आर्थिक दशा सुधारने वाला धन विवादों में नष्ट होने से उसकी दुरवस्था और बनी रहती है।

चरण 3: निष्कर्ष पुश्तैनी रंजिश पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आने वाली शत्रुता है। इसके कारण किसान झगड़ों और मुकदमों में फँसकर अपनी मेहनत की कमाई गँवा देता है तथा उसका आर्थिक विकास रुक जाता है।

त्वरित सुझाव: पहले पुश्तैनी शब्द का पीढ़ियों से संबंध बताइए, फिर मुकदमेबाजी में कमाई नष्ट होने का परिणाम लिखिए।

2(घ). 'किसान की सनातन समस्या' क्या मानी गई है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सनातन का प्रसंगगत अर्थ लंबे समय से बनी रहने वाली समस्या है।
- गद्यांश पूँजी की कमी को खेती की जरूरतों और ऋण के दबाव से जोड़ता है।

चरण 1: समस्या की पहचान और कारण गद्यांश में पूँजी के अभाव को किसान की सनातन समस्या माना गया है। उसके पास बीज, खाद और खेती के आवश्यक उपकरण खरीदने की क्षमता प्रायः नहीं होती। खेती करने के लिए इन साधनों की जरूरत बनी रहती है, इसलिए धन की कमी उसके सामने बार-बार आती है और काम में बाधा डालती है।

चरण 2: कमी का स्थायी दुष्चक्र आवश्यक पूँजी पाने के लिए किसान साहूकार या बैंक से ऋण लेता है। फसल नष्ट होने पर उसकी आय का आधार छिन जाता है, किंतु ऋण-वसूली बंद नहीं होती। इस तरह धन की कमी उसे उधार लेने को बाध्य करती है और संकट आने पर वही ऋण उसकी परेशानी बढ़ाता है। इस निरंतर आर्थिक असहायता के कारण इसे सनातन समस्या कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष पूँजी का अभाव किसान की सनातन समस्या है, क्योंकि बीज, खाद और उपकरण खरीदने के लिए उसके पास पर्याप्त धन नहीं होता। उसे बार-बार ऋण लेना पड़ता है और फसल नष्ट होने पर ऋण चुकाने का आधार भी नहीं बचता।

त्वरित सुझाव: सनातन समस्या का नाम लिखकर खेती की आवश्यक वस्तुओं और ऋण लेने की विवशता से कारण स्पष्ट कीजिए।

2(ङ). "फँसता वह दोनों ओर है।" कैसे? समझाइए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथन का आशय उसके पहले और बाद में दी गई परिस्थितियों को जोड़कर स्पष्ट किया जाता है।
- यहाँ दोनों ओर से तात्पर्य साहूकार और बैंक से ऋण लेने की स्थितियों से है।

चरण 1: ऋण लेने की विवशता किसान के पास प्रायः इतनी पूँजी नहीं होती कि वह बीज, खाद और उपकरण खरीद सके। खेती चलाने के लिए उसे उधार लेना पड़ता है। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए वह साहूकार अथवा बैंक का सहारा लेता है। इसलिए ऋण लेना उसके लिए केवल इच्छा की बात नहीं, अपनी खेती जारी रखने की विवशता है।

चरण 2: दोनों ओर फँसने का आशय प्राकृतिक या मानवी कारणों से फसल नष्ट हो जाए तो किसान की आय का आधार समाप्त हो जाता है। फिर भी ऋण की वसूली में न साहूकार दया करता है और न बैंक। अतः किसी से भी उधार लेने पर किसान को ऐसी हालत में भुगतान का दबाव झेलना पड़ता है। यही दोनों ओर फँसने का आशय है।

चरण 3: निष्कर्ष पूँजी के अभाव में किसान साहूकार या बैंक से ऋण लेता है। फसल नष्ट होने पर भी दोनों ऋण वसूलते हैं; इसलिए दोनों ही स्थितियों में वह ऋण के संकट में फँस जाता है।

त्वरित सुझाव: दोनों ओर का अर्थ स्पष्ट करते समय साहूकार और बैंक का नाम तथा फसल नष्ट होने के बाद वसूली का दबाव अवश्य लिखिए।

2(च). किसानों के द्वारा आत्महत्या का मुख्य कारण क्या होता है? उससे छुटकारा आपके विचार से कैसे संभव है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में बताए कारण और प्रश्न में माँगे गए अपने सुझाव को अलग-अलग स्पष्ट करना चाहिए।
- उपाय उन्हीं समस्याओं से जुड़े हों जो गद्यांश में सामने आई हैं।

चरण 1: मुख्य कारण किसान पूँजी के अभाव में खेती के लिए ऋण लेता है। प्राकृतिक अथवा मानवी कारणों से फसल नष्ट होने पर उसकी आय समाप्त हो जाती है, पर साहूकार और बैंक ऋण की वसूली करते रहते हैं। ऋण चुकाने और इस संकट से निकलने का रास्ता न देखकर वह निराश हो जाता है। गद्यांश में यही आर्थिक विवशता आत्महत्या का मुख्य कारण बताई गई है।

चरण 2: छुटकारे के उपाय मेरे विचार से फसल नष्ट होने पर किसान को समय पर आर्थिक सहायता और ऋण चुकाने में राहत मिलनी चाहिए। बीज, खाद और उपकरण उचित मूल्य पर उपलब्ध हों तथा उपज का उचित मूल्य मिले, जिससे उसे अधिक उधार न लेना पड़े। सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे गाँवों तक पहुँचाना और किसानों को संगठित करना भी आवश्यक है। इससे संकट में उसे सहारा मिल सकेगा।

चरण 3: निष्कर्ष फसल नष्ट होने के बाद भी कठोर ऋण-वसूली और उससे उपजी निराशा मुख्य कारण हैं। समय पर सहायता, ऋण में राहत, उपज का उचित मूल्य तथा योजनाओं की सीधी पहुँच से इस संकट को कम किया जा सकता है।

त्वरित सुझाव: पहले गद्यांश के अनुसार कारण लिखिए, फिर उसी कारण को दूर करने वाले दो या तीन व्यावहारिक सुझाव दीजिए।

2(छ). गद्यांश से दो मुहावरे चुनकर उनका प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुहावरे का अर्थ उसके शब्दों के साधारण अर्थ से अलग, प्रचलित भाव में लिया जाता है।
- वाक्य ऐसा होना चाहिए जिससे मुहावरे का भाव स्पष्ट हो और व्याकरण भी सही रहे।

चरण 1: पहला मुहावरा और प्रयोग मुहावरा: खून-पसीने की गाढ़ी कमाई। अर्थ: बहुत कठिन परिश्रम से कमाया हुआ धन। वाक्य: मजदूर ने अपने खून-पसीने की गाढ़ी कमाई से बच्चों की पढ़ाई का प्रबंध किया। इस वाक्य में कमाई के पीछे लगे कठिन श्रम का भाव स्पष्ट होता है। गद्यांश में भी यह प्रयोग किसान के परिश्रम से अर्जित धन के लिए आया है।

चरण 2: दूसरा मुहावरा और प्रयोग मुहावरा: पैरों तले की ज़मीन खिसक जाना। अर्थ: बड़ा संकट आने पर सहारा छिन जाना या अत्यंत घबरा जाना। वाक्य: घर में आग लगने की खबर सुनते ही रमेश के पैरों तले की ज़मीन खिसक गई। यहाँ अचानक आए संकट और घबराहट का भाव व्यक्त हुआ है। गद्यांश में इस मुहावरे से किसान के आर्थिक आधार के समाप्त होने की स्थिति स्पष्ट की गई है।

चरण 3: निष्कर्ष खून-पसीने की गाढ़ी कमाई: किसान ने अपने खून-पसीने की गाढ़ी कमाई से नया उपकरण खरीदा। पैरों तले की ज़मीन खिसक जाना: नौकरी छूटने की खबर सुनकर मोहन के पैरों तले की ज़मीन खिसक गई।

त्वरित सुझाव: दोनों मुहावरे गद्यांश से चुनिए और अपने वाक्यों में उनका लाक्षणिक अर्थ स्पष्ट रखिए; केवल अर्थ लिखना पर्याप्त नहीं है।

2(ज). गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपयुक्त शीर्षक संक्षिप्त होता है और गद्यांश के मुख्य विचार को समेटता है।
- शीर्षक पूरे गद्यांश के विषय पर हो, केवल किसी एक उदाहरण पर नहीं।

चरण 1: केंद्रीय विषय पहचानना गद्यांश में किसान की अशिक्षा, संगठन और पूँजी का अभाव, आपसी रंजिश तथा ऋण का संकट बताया गया है। इन सभी बातों का संबंध किसान की दयनीय स्थिति से है।

चरण 2: शीर्षक का चयन इन समस्याओं को एक साथ व्यक्त करने वाला शीर्षक 'भारतीय किसान की दुर्दशा' है। यह किसान की आर्थिक और सामाजिक कठिनाइयों, दोनों को समेटता है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक: भारतीय किसान की दुर्दशा।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय देखिए कि वह किसान की सभी प्रमुख समस्याओं को समेटता हो और अनावश्यक रूप से लंबा न हो।

3(क). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : भारतीय संस्कृति [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारात्मक निबंध में भूमिका, विषय का क्रमिक विस्तार और सार्थक उपसंहार होता है।
- संस्कृति के विवेचन में जीवन-मूल्य, विविधता, ज्ञान-परंपरा और वर्तमान दायित्व का संतुलन आवश्यक है।

चरण 1: रूपरेखा और विषय-विस्तार शीर्षक के बाद संस्कृति का अर्थ स्पष्ट किया जाएगा। फिर भारतीय संस्कृति के प्रमुख जीवन-मूल्य, विभिन्न परंपराओं के सहअस्तित्व, ज्ञान और कला के योगदान तथा वर्तमान चुनौतियों की चर्चा होगी। अंतिम अनुच्छेद में श्रेष्ठ परंपराओं को अपनाने और सामाजिक बुराइयों को दूर करने की आवश्यकता बताई जाएगी। निबंध में विचार क्रमबद्ध और भाषा सरल रखी जाएगी।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध भारतीय संस्कृति

संस्कृति किसी समाज के जीवन-मूल्यों, आचार-विचार, ज्ञान, कला और परंपराओं का समन्वित रूप है। भारतीय संस्कृति का विकास लंबे समय में अनेक समुदायों के योगदान से हुआ है। इसकी पहचान विविधता के बीच एकता और जीवन के प्रति व्यापक दृष्टि है।

भारत में अनेक भाषाएँ, धर्म, वेशभूषाएँ और रीति-रिवाज हैं। फिर भी पारिवारिक स्नेह, अतिथि-सत्कार, बड़ों के प्रति आदर और परस्पर सहयोग जैसे मूल्य लोगों को जोड़ते हैं। हमारे पर्व और उत्सव केवल मनोरंजन के अवसर नहीं हैं; वे सामाजिक संबंधों को सुदृढ़ करते हैं। दूसरों के विश्वास का सम्मान करना और मिल-जुलकर रहना हमारी सांस्कृतिक समृद्धि का आधार है।

भारतीय संस्कृति ने ज्ञान और कला को भी विशेष महत्त्व दिया है। दर्शन, गणित, साहित्य, संगीत, नृत्य और स्थापत्य की विविध परंपराएँ इसकी सृजनशीलता को प्रकट करती हैं। लोकगीत, लोककथाएँ और शिल्प सामान्य जन के अनुभवों को सँजोते हैं। प्रकृति के प्रति सम्मान तथा मानव-कल्याण की भावना हमें अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर सोचने की प्रेरणा देती है।

आज तकनीकी विकास और वैश्विक संपर्क से हमारा जीवन बदल रहा है। इस परिवर्तन में हमें अपनी भाषाओं, लोककलाओं और मानवीय मूल्यों को सुरक्षित रखना चाहिए। साथ ही जातिगत भेदभाव, अंधविश्वास और स्त्री-असमानता को संस्कृति के नाम पर उचित नहीं ठहराना चाहिए। जीवंत संस्कृति समय के साथ अपने दोषों को पहचानकर सुधारती है।

भारतीय संस्कृति की रक्षा केवल अतीत का गुणगान करने से नहीं होगी। सहिष्णुता, समानता, वैज्ञानिक दृष्टि और सेवा को अपने व्यवहार में उतारना होगा। श्रेष्ठ परंपराओं और प्रगतिशील विचारों का मेल ही हमारी संस्कृति को भविष्य में समृद्ध बनाएगा।

चरण 3: निष्कर्ष भारतीय संस्कृति की सार्थकता विविधता के सम्मान, मानवीय मूल्यों और निरंतर आत्मसुधार में है। निबंध में भूमिका से उपसंहार तक इसी केंद्रीय विचार का क्रमबद्ध विकास किया गया है।

त्वरित सुझाव: निबंध में केवल संस्कृति की प्रशंसा न करें; उसके ठोस उदाहरण, वर्तमान चुनौतियाँ और सुधार का सकारात्मक मार्ग भी लिखें।

3(ख). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : विद्यालय समाज के आस्था केंद्र कैसे बनें? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में प्रस्तावना, विषय का क्रमबद्ध विस्तार और उपसंहार होना चाहिए। प्रश्न में विद्यालय को समाज का विश्वास अर्जित करने वाली संस्था बनाने के उपाय पूछे गए हैं।
- यहाँ आस्था का अर्थ अंधविश्वास नहीं, बल्कि विद्यालय की शिक्षा, निष्पक्षता और सामाजिक उपयोगिता के प्रति भरोसा है।

चरण 1: प्रारूप और विषय की रूपरेखा शीर्षक के बाद पहले विद्यालय की सामाजिक भूमिका स्पष्ट करें। फिर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, समान

अवसर, शिक्षक के आचरण और समाज की भागीदारी को अलग अनुच्छेदों में रखें। अंत में सेवा, पारदर्शिता और सहयोग को विश्वास का आधार बताते हुए सकारात्मक निष्कर्ष दें। भाषा विचारात्मक हो और हर सुझाव का संबंध समाज के भरोसे से जुड़ा रहे।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध **विद्यालय समाज के आस्था केंद्र कैसे बनें?**

विद्यालय केवल पाठ्यपुस्तकें पढ़ाने और परीक्षाएँ लेने का स्थान नहीं है। वह भावी नागरिकों के व्यक्तित्व का निर्माण करता है। परिवार के बाद बालक यहीं सहयोग, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व सीखता है। इसलिए विद्यालय को ऐसा केंद्र बनना चाहिए जिस पर समाज अपने बच्चों का भविष्य विश्वासपूर्वक सौंप सके।

इस विश्वास की पहली शर्त है गुणवत्तापूर्ण और समावेशी शिक्षा। विद्यालय में किसी बच्चे के साथ जाति, धर्म, आर्थिक स्थिति या लिंग के आधार पर भेदभाव न हो। निर्धन और दिव्यांग विद्यार्थियों को भी सीखने के पर्याप्त अवसर मिलें। स्वच्छ परिसर, सुरक्षित वातावरण, पुस्तकालय और खेल के साधन शिक्षा को सार्थक बनाते हैं। पढ़ाई केवल रटने तक सीमित न रहे; विद्यार्थियों में प्रश्न पूछने, तर्क करने और समस्याएँ सुलझाने की क्षमता विकसित हो।

शिक्षक विद्यालय की आत्मा हैं। उनका समयपालन, संवेदनशील व्यवहार और ईमानदारी बच्चों के सामने जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। भय और दंड के स्थान पर संवाद तथा प्रोत्साहन को महत्त्व दिया जाए। विद्यार्थी की कठिनाई समझकर सहायता करने वाला शिक्षक अभिभावकों का विश्वास भी जीतता है।

विद्यालय और समाज का संबंध निरंतर संवाद पर आधारित हो। अभिभावक बैठकों में केवल अंक न बताए जाएँ, बल्कि बच्चों की रुचियों, कठिनाइयों और प्रगति पर चर्चा हो। विद्यालय की योजनाओं और संसाधनों के उपयोग में पारदर्शिता रहे। स्थानीय लोगों के अनुभवों से विद्यार्थियों को सीखने का अवसर मिले और शिकायतों का निष्पक्ष समाधान किया जाए।

सामाजिक सेवा भी विद्यालय को समुदाय से जोड़ती है। स्वच्छता अभियान, साक्षरता कार्यक्रम, पर्यावरण संरक्षण और जरूरतमंदों की सहायता में विद्यार्थियों की भागीदारी हो। ऐसी गतिविधियाँ उन्हें दूसरों के दुख के प्रति संवेदनशील बनाती हैं। विद्यालय का ज्ञान जब आसपास के जीवन में उपयोगी दिखाई देता है, तभी उसके प्रति सम्मान बढ़ता है।

इस प्रकार विद्यालय प्रचार या ऊँची इमारतों से आस्था केंद्र नहीं बनते। वे शिक्षा की गुणवत्ता, मानवीय व्यवहार और समाज के प्रति उत्तरदायित्व से यह स्थान अर्जित करते हैं। विद्यालय और समुदाय मिलकर कार्य करें तो शिक्षा व्यक्तिगत सफलता के साथ सामाजिक उन्नति का माध्यम भी बन सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष विद्यालय समान अवसर, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, संवेदनशील शिक्षकों, पारदर्शी व्यवस्था और सामाजिक सेवा द्वारा समाज का विश्वास प्राप्त कर सकते हैं।

त्वरित सुझाव: इस विषय में हर उपाय को समाज के विश्वास से जोड़ें; केवल आदर्श विद्यालय की सुविधाओं की सूची बनाकर निबंध समाप्त न करें।

3(ग). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : अंतरिक्ष की ओर बढ़ता भारत [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारात्मक निबंध में विषय का परिचय, उपलब्धियों और उपयोगिता का क्रमबद्ध विवेचन तथा भविष्य की दिशा का उपसंहार रहता है।
- अंतरिक्ष विज्ञान की चर्चा में वैज्ञानिक उपलब्धियों के साथ संचार, मौसम, कृषि और आपदा प्रबंधन में उनके सामाजिक लाभ स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: प्रारूप और विषय की रूपरेखा शीर्षक के बाद भारत की वैज्ञानिक प्रगति का परिचय दें। मुख्य भाग में अंतरिक्ष कार्यक्रम की शुरुआत, प्रमुख उपलब्धियाँ, जनजीवन में उपयोग तथा चुनौतियाँ रखें। प्रश्नपत्र के समय तक की उपलब्धियों का ही उल्लेख करें। अंत में वैज्ञानिक दृष्टि और जनकल्याण को जोड़ते हुए भविष्य के प्रति आशा व्यक्त करें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध **अंतरिक्ष की ओर बढ़ता भारत**

मनुष्य की जिज्ञासा उसे सदा नई दिशाओं की खोज के लिए प्रेरित करती रही है। कभी आकाश में चमकते तारों को देखकर आश्चर्य करने

वाला मनुष्य आज अंतरिक्ष का अध्ययन कर रहा है। भारत ने भी सीमित संसाधनों के बावजूद अपनी प्रतिभा और परिश्रम से अंतरिक्ष विज्ञान में महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया है। उसका अंतरिक्ष कार्यक्रम राष्ट्रीय आत्मविश्वास और वैज्ञानिक क्षमता का प्रतीक है।

भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के विकास में डॉ. विक्रम साराभाई जैसे वैज्ञानिकों का विशेष योगदान रहा। उनका उद्देश्य अंतरिक्ष तकनीक को देश की वास्तविक आवश्यकताओं से जोड़ना था। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने इस विचार को आगे बढ़ाया। सन् 1975 में भारत के प्रथम उपग्रह आर्यभट्ट का प्रक्षेपण एक उल्लेखनीय उपलब्धि थी। इसके बाद उपग्रह निर्माण और प्रक्षेपण तकनीक में देश निरंतर प्रगति करता गया।

चंद्रयान-1 ने चंद्रमा के अध्ययन में भारत की भूमिका स्थापित की। मंगलयान का अपने पहले ही प्रयास में मंगल की कक्षा में पहुँचना भारतीय वैज्ञानिकों की योग्यता का प्रमाण बना। सन् 2017 में एक ही अभियान में 104 उपग्रहों का प्रक्षेपण भी भारत की तकनीकी दक्षता की बड़ी उपलब्धि थी। इन सफलताओं ने विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ाई और युवाओं को वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रेरणा दी।

अंतरिक्ष अनुसंधान का लाभ केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है। उपग्रह दूरसंचार और दूरदर्शन सेवाओं को सुदूर क्षेत्रों तक पहुँचाते हैं। मौसम संबंधी सूचनाएँ किसानों और मछुआरों के लिए उपयोगी होती हैं। चक्रवात की पूर्व चेतावनी से लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाने में सहायता मिलती है। उपग्रह चित्र जलस्रोतों, वनों और कृषि क्षेत्रों के अध्ययन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार अंतरिक्ष तकनीक जनजीवन को अधिक सुरक्षित और सुविधाजनक बनाती है।

इस क्षेत्र में चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं। अनुसंधान के लिए धन, प्रशिक्षित वैज्ञानिकों और निरंतर प्रयोग की आवश्यकता होती है। अंतरिक्ष मलबे और संसाधनों के जिम्मेदार उपयोग जैसी समस्याओं पर भी ध्यान देना होगा। विद्यालयों में वैज्ञानिक दृष्टि विकसित करना और युवाओं को शोध के अवसर देना भविष्य की प्रगति के लिए आवश्यक है।

भारत की अंतरिक्ष यात्रा बताती है कि स्पष्ट लक्ष्य, आत्मनिर्भरता और सामूहिक परिश्रम से बड़ी उपलब्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस यात्रा की वास्तविक सफलता तभी है जब विज्ञान का लाभ सामान्य नागरिक तक पहुँचे। जनकल्याण से जुड़ा अंतरिक्ष अनुसंधान भारत को नई ऊँचाइयों की ओर ले जा सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष भारत की अंतरिक्ष प्रगति वैज्ञानिक आत्मनिर्भरता की उपलब्धि है; संचार, कृषि और आपदा प्रबंधन में उसका उपयोग इसे जनकल्याण से जोड़ता है।

त्वरित सुझाव: अंतरिक्ष पर निबंध में उपलब्धियों की सूची के साथ उनके जनजीवन पर प्रभाव भी लिखें और प्रश्नपत्र के समय के बाद की घटनाओं से बचें।

3(घ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : स्त्री शिक्षा : भारत की नींव [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का स्पष्ट प्रतिपादन, तर्कपूर्ण विस्तार और सार्थक उपसंहार होना चाहिए।
- स्त्री शिक्षा का संबंध समान अवसर, आत्मनिर्भरता, परिवार के विकास और राष्ट्र की प्रगति से है।

चरण 1: रूपरेखा तैयार करना भूमिका में शिक्षा का महत्त्व बताएँ। विस्तार में शिक्षित स्त्री की व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक भूमिका स्पष्ट करें। फिर बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली बाधाओं और उनके व्यावहारिक समाधानों का उल्लेख करें। अंत में समान अवसर और सामूहिक उत्तरदायित्व पर बल दें।

चरण 2: पूरा निबंध स्त्री शिक्षा : भारत की नींव

किसी भी राष्ट्र की उन्नति उसके नागरिकों की शिक्षा पर निर्भर करती है। स्त्रियाँ समाज की लगभग आधी आबादी हैं। उन्हें शिक्षा से वंचित रखकर भारत के समग्र विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। इसीलिए स्त्री शिक्षा को राष्ट्र की मजबूत नींव कहना उचित है।

शिक्षा स्त्री को अपने अधिकारों और कर्तव्यों का बोध कराती है। वह सोचने, निर्णय लेने और अन्याय का विरोध करने का साहस प्राप्त करती है। शिक्षा तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण से उसके लिए रोजगार के अवसर बढ़ते हैं। आर्थिक आत्मनिर्भरता उसे सम्मानपूर्ण जीवन जीने और परिवार के निर्णयों में भाग लेने की शक्ति देती है।

शिक्षित स्त्री का प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ता है। स्वास्थ्य, पोषण, स्वच्छता और बच्चों की पढ़ाई के प्रति उसकी जागरूकता आने वाली

पीढ़ी को बेहतर जीवन देती है। वह लड़के और लड़की के बीच भेदभाव को चुनौती दे सकती है। शिक्षा के कारण स्त्रियाँ विज्ञान, प्रशासन, चिकित्सा, साहित्य, खेल और उद्यम जैसे विविध क्षेत्रों में योगदान देती हैं। उनकी प्रतिभा का विकास देश की उत्पादन क्षमता और सामाजिक चेतना को बढ़ाता है।

फिर भी गरीबी, बाल विवाह, घरेलू काम का असमान बोझ और पुरानी मान्यताएँ अनेक बालिकाओं की पढ़ाई में बाधा बनती हैं। दूर स्थित विद्यालय, असुरक्षित आवागमन तथा आवश्यक सुविधाओं का अभाव भी पढ़ाई छूटने के कारण हैं। इन बाधाओं को दूर करना परिवार, समाज और सरकार का संयुक्त दायित्व है।

बालिकाओं के लिए सुरक्षित विद्यालय, स्वच्छ शौचालय, छात्रवृत्ति, पुस्तकें और आवागमन की सुविधाएँ उपलब्ध होनी चाहिए। अभिभावकों को समझना होगा कि बेटी की शिक्षा भविष्य में निवेश है। उसे अपनी रुचि के विषय चुनने और उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलना चाहिए।

स्त्री शिक्षा केवल किसी एक व्यक्ति का कल्याण नहीं करती; वह परिवार और समाज की प्रगति का मार्ग खोलती है। भारत की नींव तभी मजबूत होगी जब हर बेटी निर्भय होकर सीखेगी और अपनी क्षमताओं का पूरा विकास कर सकेगी।

चरण 3: निष्कर्ष प्रत्येक बालिका को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और आगे बढ़ने के समान अवसर देना भारत के विकास की आवश्यक शर्त है।

त्वरित सुझाव: निबंध में व्यक्तिगत लाभ से परिवार और फिर राष्ट्र की प्रगति तक तर्क का क्रम बढ़ाएँ।

4(क). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : संपादक का मुख्य कार्य क्या है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादन का उद्देश्य समाचार सामग्री को प्रकाशन योग्य, विश्वसनीय और स्पष्ट बनाना है।
- उत्तर में पूछी गई संकल्पना का सीधा अर्थ और उसकी प्रमुख विशेषता स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 1: मुख्य कार्य पहचानना संपादक प्राप्त समाचारों और अन्य सामग्री का चयन करता है तथा उनकी तथ्यगत और भाषागत शुद्धता सुनिश्चित करता है। वह सामग्री की उपयोगिता और महत्त्व के अनुसार उसके प्रस्तुतीकरण का निर्णय भी करता है।

चरण 2: उत्तर को संक्षिप्त करना प्रश्न मुख्य कार्य पूछता है, इसलिए कार्यालय के सभी प्रशासनिक दायित्व गिनाना आवश्यक नहीं है। चयन, संशोधन और उपयुक्त प्रस्तुति को एक स्पष्ट वाक्य में जोड़ना पर्याप्त है।

चरण 3: निष्कर्ष संपादक का मुख्य कार्य समाचारों और अन्य सामग्री का चयन, संशोधन तथा उपयुक्त प्रस्तुतीकरण करके उन्हें प्रकाशन योग्य बनाना है।

त्वरित सुझाव: संपादक का उत्तर लिखते समय चयन, शुद्धि और प्रस्तुति के तीन जुड़े कार्य याद रखें।

4(ख). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'इंट्रो' किसे कहते हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार की रचना में सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य आरंभ में देने की परंपरा है।
- उत्तर में पूछी गई संकल्पना का सीधा अर्थ और उसकी प्रमुख विशेषता स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 1: अर्थ पहचानना इंट्रो समाचार का आरंभिक अनुच्छेद है। इसमें घटना का सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य संक्षेप में प्रस्तुत किया जाता है, ताकि पाठक को समाचार का मूल आशय तुरंत समझ में आ जाए।

चरण 2: विशेषता स्पष्ट करना इंट्रो पाठक की रुचि जगाता है और आगे के समाचार का आधार बनता है। इसे केवल शीर्षक कहना उचित

नहीं है, क्योंकि शीर्षक के बाद आने वाला आरंभिक अनुच्छेद समाचार का मुख्य तथ्य बताता है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार के पहले अनुच्छेद को इंट्रो या मुखड़ा कहते हैं; इसमें समाचार का सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य संक्षेप में दिया जाता है।

त्वरित सुझाव: इंट्रो की परिभाषा में पहला अनुच्छेद और सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य दोनों अवश्य लिखें।

4(ग). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'फ़ोन इन' क्या है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टेलीविजन समाचारों में घटनास्थल की ताजा जानकारी संवाददाता से प्राप्त की जाती है।
- उत्तर में पूछी गई संकल्पना का सीधा अर्थ और उसकी प्रमुख विशेषता स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 1: प्रक्रिया समझना फ़ोन इन में समाचार प्रस्तुतकर्ता टेलीफोन के माध्यम से घटनास्थल पर उपस्थित संवाददाता से सीधे बातचीत करता है। संवाददाता वहाँ की स्थिति और नवीनतम घटनाक्रम की जानकारी देता है।

चरण 2: माध्यम की पहचान करना इस प्रक्रिया का आधार फोन पर होने वाला सीधा संपर्क है। संवाददाता की आवाज प्रसारित होती है और प्रस्तुतकर्ता उससे आवश्यक प्रश्न पूछ सकता है। इसे केवल दर्शकों के फोन करने वाले कार्यक्रम का नाम समझना उचित नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष फ़ोन इन वह प्रक्रिया है जिसमें समाचार प्रस्तुतकर्ता घटनास्थल पर मौजूद संवाददाता से फोन पर सीधे बातचीत करके ताजा जानकारी प्राप्त करता है।

त्वरित सुझाव: फ़ोन इन समझाते समय प्रस्तुतकर्ता, घटनास्थल का संवाददाता और फोन से सीधा संपर्क लिखें।

4(घ). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'वाचडॉग पत्रकारिता' से क्या आशय है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लोकतंत्र में पत्रकारिता जनहित की रक्षा के लिए सत्ता और संस्थाओं की गतिविधियों पर निगरानी रखती है।
- उत्तर में पूछी गई संकल्पना का सीधा अर्थ और उसकी प्रमुख विशेषता स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 1: निगरानी की भूमिका समझना वाचडॉग पत्रकारिता का आशय चौकीदार की तरह सजग रहना है। इसमें पत्रकार सरकार और अन्य प्रभावशाली संस्थाओं के कामकाज पर निगाह रखते हैं तथा भ्रष्टाचार, अनियमितता और अधिकारों के दुरुपयोग को उजागर करते हैं।

चरण 2: उद्देश्य स्पष्ट करना इस पत्रकारिता का उद्देश्य जनहित की रक्षा और सत्ता की जवाबदेही सुनिश्चित करना है। आरोपों की जाँच और तथ्यों की पुष्टि आवश्यक है; केवल विरोध करना या अपुष्ट सनसनी फैलाना इसका उद्देश्य नहीं होता।

चरण 3: निष्कर्ष जनहित में सरकार और प्रभावशाली संस्थाओं की निगरानी करके उनके भ्रष्टाचार, अनियमितताओं तथा सत्ता के दुरुपयोग को उजागर करना वाचडॉग पत्रकारिता है।

त्वरित सुझाव: वाचडॉग पत्रकारिता को चौकीदार की सजगता, जनहित और जवाबदेही से जोड़कर परिभाषित करें।

4(ङ). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'प्रिंट मीडिया' के कोई दो लाभ लिखिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रिंट मीडिया में समाचारपत्र और पत्रिकाएँ जैसे मुद्रित जनसंचार माध्यम आते हैं।
- उत्तर में पूछी गई संकल्पना का सीधा अर्थ और उसकी प्रमुख विशेषता स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 1: पहला लाभ बताना मुद्रित सामग्री को पाठक अपनी सुविधा के समय और अपनी गति से पढ़ सकता है। किसी कठिन या महत्त्वपूर्ण अंश को समझने के लिए वह उसे दोबारा भी पढ़ सकता है। इसके लिए प्रसारण का समय पकड़ना आवश्यक नहीं होता।

चरण 2: दूसरा लाभ बताना समाचारपत्र या पत्रिका को सुरक्षित रखकर भविष्य में संदर्भ के रूप में उपयोग किया जा सकता है। किसी समाचार, जानकारी या विचार की आवश्यकता होने पर पाठक उस मुद्रित सामग्री को फिर देख सकता है। इस प्रकार पढ़ने की सुविधा और संग्रह की सुविधा दो अलग लाभ हैं।

चरण 3: निष्कर्ष प्रिंट मीडिया के दो लाभ हैं : (1) सामग्री को अपनी सुविधा और गति से बार-बार पढ़ सकते हैं। (2) उसे सुरक्षित रखकर भविष्य में संदर्भ के रूप में उपयोग कर सकते हैं।

त्वरित सुझाव: दो लाभ पूछे जाने पर सुविधा से पढ़ना और भविष्य के लिए संग्रह करना अलग-अलग बिंदुओं में लिखें।

5. 'जल ही जीवन है' विषय पर एक फ़ीचर लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी विषय को मानवीय अनुभव, रोचक प्रस्तुति और उपयोगी जानकारी के माध्यम से सामने लाता है। इसमें जीवन से जुड़े दृश्यों तथा संवेदनाओं के साथ विषय के सामाजिक पक्ष का परिचय दिया जाता है।
- आकर्षक शीर्षक, जिज्ञासा जगाने वाला आरंभ, विषय का क्रमबद्ध विस्तार और पाठक को जिम्मेदारी का अनुभव कराने वाला अंत फ़ीचर को प्रभावी बनाते हैं। भाषा सरल, चित्रात्मक और विषयानुकूल होनी चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना बनाइए आरंभ में सूखे नल के सामने पानी की प्रतीक्षा करते लोगों का दृश्य रखें। फिर दैनिक जीवन, खेती और पर्यावरण में पानी की भूमिका स्पष्ट करें। अपव्यय, प्रदूषण और वर्षाजल की उपेक्षा से पैदा संकट समझाएँ। अंत में घर और समुदाय के स्तर पर किए जा सकने वाले संरक्षण के उपाय दें। नीचे इसी योजना का पूर्ण नमूना है।

चरण 2: पूर्ण फ़ीचर लिखिए **जल ही जीवन है: हर बूँद की पुकार**

सुबह का समय है। गली के नल के सामने खाली बाल्टियों की कतार लगी है। पानी आने की आहट पर सबकी निगाहें उधर उठ जाती हैं। यही पानी जब हमारे घर में लगातार बहता रहता है, तब शायद हमें उसकी कीमत याद नहीं रहती। सूखा नल समझाता है कि जीवन की सबसे साधारण दिखने वाली चीज कितनी अनमोल है।

प्यास बुझाने से लेकर भोजन पकाने और सफाई तक, पानी हमारी दिनचर्या का आधार है। खेतों की हरियाली, पशु-पक्षियों का जीवन और पेड़ों की छाया भी इसी पर निर्भर हैं। एक सूखता तालाब केवल जलाशय का अंत नहीं, आसपास के अनेक जीवों के आश्रय का संकट भी है।

फिर भी हम नलों को खुला छोड़ देते हैं, गंदा पानी नदियों में बहाते हैं और बारिश को सड़कों से निकल जाने देते हैं। धरती से पानी लेते समय हम उसे वापस पहुँचाने की चिंता नहीं करते। बढ़ती माँग और लापरवाह उपयोग मिलकर संकट को गंभीर बनाते हैं।

उपाय हमारे दरवाजे से शुरू हो सकते हैं। टपकते नल की मरम्मत कराएँ, आवश्यकता भर पानी लें और छत के वर्षाजल को सुरक्षित संग्रह या भूजल पुनर्भरण तक पहुँचाएँ। मोहल्ले के तालाबों को कूड़ाघर बनने से बचाना भी साझा जिम्मेदारी है। बच्चों को पानी बचाने का उपदेश देने से पहले बड़े स्वयं उदाहरण बनें।

पानी का सम्मान किसी एक दिन का अभियान नहीं, रोज की आदत है। अगली बार नल खोलें तो उस गली की खाली बाल्टियाँ याद कर

लें। आज बचाई गई बूँद कल किसी की प्यास, किसी खेत और किसी जीवन का सहारा बन सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष इस फ़ीचर में जीवन से जुड़े दृश्य, विषय का सामाजिक महत्त्व और व्यक्तिगत जिम्मेदारी एक सूत्र में रखे गए हैं। रोचक आरंभ के बाद ठोस उदाहरण तथा प्रेरक अंत विषय को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करते हैं।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर की शुरुआत किसी छोटे जीवन-दृश्य से करें और अंत में उसी अनुभव से जुड़ा संदेश दें; इससे रचना की एकता और प्रभाव बढ़ता है।

अथवा

5. 'मेरा देश मेरा कर्त्तव्य' विषय पर एक फ़ीचर लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी विषय को मानवीय अनुभव, रोचक प्रस्तुति और उपयोगी जानकारी के माध्यम से सामने लाता है। इसमें जीवन से जुड़े दृश्यों तथा संवेदनाओं के साथ विषय के सामाजिक पक्ष का परिचय दिया जाता है।
- आकर्षक शीर्षक, जिज्ञासा जगाने वाला आरंभ, विषय का क्रमबद्ध विस्तार और पाठक को जिम्मेदारी का अनुभव कराने वाला अंत फ़ीचर को प्रभावी बनाते हैं। भाषा सरल, चित्रात्मक और विषयानुकूल होनी चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना बनाइए आरंभ में राष्ट्रीय उत्सव के अगले दिन का कोई दृश्य रखें। देशप्रेम को रोज के नागरिक व्यवहार से जोड़ें। सार्वजनिक संपत्ति, स्वच्छता, ईमानदारी, सामाजिक सद्भाव और जिम्मेदार भागीदारी के उदाहरण दें। अंत में व्यक्तिगत आचरण बदलने का संकल्प रखें। फ़ीचर का शीर्षक और पूरा नमूना नीचे दिया गया है।

चरण 2: पूर्ण फ़ीचर लिखिए **मेरा देश मेरा कर्त्तव्य: जिम्मेदारी का हर दिन**

राष्ट्रीय पर्व का समारोह समाप्त हो चुका है। मैदान में कुर्सियाँ समेटी जा रही हैं और किनारे कुछ कागज बिखरे हैं। एक छात्र झुककर उन्हें उठाता है। उसका छोटा-सा काम पूछता है: क्या देश के प्रति हमारा प्रेम समारोह समाप्त होते ही समाप्त हो जाता है?

देश केवल नक्शे पर खिंची सीमा नहीं है। उसमें हमारी गलियाँ, खेत, विद्यालय और वे लोग भी शामिल हैं जिनसे हम रोज मिलते हैं। इसलिए देश के प्रति कर्त्तव्य का आरंभ अपने आसपास से होता है। सड़क को साफ रखना, पानी बचाना और सार्वजनिक बस की सीट को नुकसान न पहुँचाना भी इसी जिम्मेदारी के रूप हैं।

हम अधिकारों की चर्चा उत्साह से करते हैं, पर अपने हिस्से के काम से कभी-कभी बचते हैं। अनुशासन दूसरों से चाहते हैं और स्वयं पंक्ति तोड़ देते हैं। ईमानदारी की प्रशंसा करते हैं, लेकिन सुविधा के लिए गलत रास्ते को स्वीकार कर लेते हैं। देश तभी बेहतर होगा जब हमारे छोटे निर्णय हमारे बड़े आदर्शों का साथ देंगे।

विद्यार्थी का कर्त्तव्य मन लगाकर सीखना, नकल से बचना और जरूरतमंद साथी की सहायता करना है। वयस्क नागरिक को नियमों का पालन, अपने काम में ईमानदारी और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में जिम्मेदार भागीदारी निभानी चाहिए। भाषा, धर्म या क्षेत्र के कारण किसी का अपमान करना देश की एकता को चोट पहुँचाता है। भिन्नताओं के बीच सम्मान बनाए रखना हमारी साझा शक्ति है।

बदलाव के लिए किसी बड़े पद की प्रतीक्षा आवश्यक नहीं। एक पेड़ की देखभाल, किसी बुजुर्ग की सहायता और मोहल्ले की समस्या सुलझाने में सहयोग भी शुरुआत हो सकते हैं। समारोह के उस छात्र की तरह हम अपने हिस्से का काम उठाएँ। तिरंगे के प्रति सम्मान तब अधिक सार्थक होगा जब उसके नीचे रहने वाले हर व्यक्ति और साझा संपत्ति के प्रति हमारा व्यवहार भी जिम्मेदार होगा।

चरण 3: निष्कर्ष इस फ़ीचर में जीवन से जुड़े दृश्य, विषय का सामाजिक महत्त्व और व्यक्तिगत जिम्मेदारी एक सूत्र में रखे गए हैं। रोचक आरंभ के बाद ठोस उदाहरण तथा प्रेरक अंत विषय को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करते हैं।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर की शुरुआत किसी छोटे जीवन-दृश्य से करें और अंत में उसी अनुभव से जुड़ा संदेश दें; इससे रचना की एकता और प्रभाव बढ़ता है।

6. अनियमित विद्युत आपूर्ति के कारण होने वाली असुविधाओं और बिजली चोरी की हो रही घटनाओं की सूचना देते हुए विद्युत विभाग के वितरण प्रबंधक को पत्र लिखिए और सुझाव भी दीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- औपचारिक पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद और पता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य तथा विनम्र समापन क्रम से लिखे जाते हैं।
- पत्र की भाषा संयत, स्पष्ट और उद्देश्य के अनुरूप होनी चाहिए। विषय से संबंधित तथ्य और व्यावहारिक सुझाव अलग अनुच्छेदों में देने से पत्र प्रभावी बनता है।

चरण 1: पत्र का प्रारूप निर्धारित करना प्रेषक का पता और दिनांक सबसे पहले लिखेंगे। इसके बाद संबंधित अधिकारी का पद और कार्यालय का पता देंगे। विषय में अनियमित विद्युत आपूर्ति और बिजली चोरी का संक्षिप्त उल्लेख होगा। संबोधन के बाद मुख्य कथ्य और अंत में धन्यवाद, भवदीय तथा नाम लिखा जाएगा।

चरण 2: समस्या के प्रभाव तथा समाधान की योजना पहले अनियमित आपूर्ति का उल्लेख करके विद्यार्थियों, घरों और दुकानों की कठिनाइयाँ बतानी हैं। फिर बिजली चोरी की सूचना देते हुए जाँच की माँग करनी है। अंत में रखरखाव, कटौती की पूर्व सूचना और नियमित निरीक्षण के सुझाव देने हैं।

चरण 3: पूरा आदर्श पत्र 24, शांति विहार
दिल्ली–110032
15 जुलाई, 2017
सेवा में,
वितरण प्रबंधक,
विद्युत वितरण विभाग,
दिल्ली–110032
विषय: अनियमित विद्युत आपूर्ति तथा बिजली चोरी की समस्या के संबंध में।
महोदय,
मैं आपका ध्यान शांति विहार में पिछले कई दिनों से हो रही अनियमित विद्युत आपूर्ति की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। दिन और रात में बार-बार बिजली जाने से नागरिकों को अत्यधिक परेशानी हो रही है। विद्यार्थियों की पढ़ाई बाधित होती है तथा पानी की मोटर न चलने से पेयजल की समस्या उत्पन्न हो जाती है। दुकानदारों और घर से काम करने वालों का काम भी रुक जाता है।
क्षेत्र में कुछ स्थानों पर बिजली के तारों से अवैध जोड़ लगाकर विद्युत चोरी किए जाने की घटनाएँ भी सामने आ रही हैं। कृपया जाँच दल भेजकर इनकी पुष्टि कराएँ और दोषियों के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई करें। अनधिकृत जोड़ दुर्घटना का खतरा भी बढ़ाते हैं।
मेरा सुझाव है कि पुराने तारों और ट्रांसफॉर्मरों का नियमित निरीक्षण तथा आवश्यक मरम्मत कराई जाए। निर्धारित कटौती की पूर्व सूचना दी जाए और शिकायत केंद्र को सक्रिय रखा जाए। बिजली चोरी रोकने के लिए नियमित जाँच तथा नागरिक जागरूकता अभियान भी चलाया जाए।
आशा है कि आप शीघ्र कार्रवाई कर क्षेत्र में सुरक्षित और नियमित विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करेंगे।
धन्यवाद।
भवदीय,
अमित कुमार
निवासी, शांति विहार

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में अनियमित विद्युत आपूर्ति और बिजली चोरी को उचित औपचारिक प्रारूप में प्रस्तुत किया गया है। स्पष्ट अनुच्छेदों और विनम्र भाषा से पत्र का उद्देश्य पूरा होता है।

त्वरित सुझाव: पत्र के विषय और मुख्य कथ्य में प्रश्न के सभी निर्देश समेटें; सुझाव माँगे जाने पर उन्हें स्पष्ट रूप से लिखें और उनसे होने वाला लाभ भी बताएँ।

अथवा

6. आपके निकट के चिकित्सालय में उपलब्ध सुविधाओं पर संतोष व्यक्त करते हुए चिकित्सा अधीक्षक को एक पत्र लिखिए तथा उसे और अधिक उपयोगी बनाने के लिए दो सुझाव भी दीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- औपचारिक पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद और पता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य तथा विनम्र समापन क्रम से लिखे जाते हैं।
- पत्र की भाषा संयत, स्पष्ट और उद्देश्य के अनुरूप होनी चाहिए। विषय से संबंधित तथ्य और व्यावहारिक सुझाव अलग अनुच्छेदों में देने से पत्र प्रभावी बनता है।

चरण 1: पत्र का प्रारूप निर्धारित करना प्रेषक का पता और दिनांक सबसे पहले लिखेंगे। इसके बाद संबंधित अधिकारी का पद और कार्यालय का पता देंगे। विषय में चिकित्सालय की सुविधाओं पर संतोष और दो सुझाव का संक्षिप्त उल्लेख होगा। संबोधन के बाद मुख्य कथ्य और अंत में धन्यवाद, भवदीय तथा नाम लिखा जाएगा।

चरण 2: प्रशंसा तथा सुधार के सुझावों की योजना पत्र में उपलब्ध सुविधाओं की उपयोगिता और कर्मचारियों के व्यवहार पर संतोष व्यक्त करना है। इसके बाद ठीक दो स्पष्ट सुझाव देने हैं: पंजीकरण व्यवस्था का विस्तार और दवाओं की उपलब्धता की सूचना। दोनों सुझावों से रोगियों को होने वाला लाभ भी बताया जाएगा।

चरण 3: पूरा आदर्श पत्र 18, विकास नगर
नई दिल्ली–110018
15 जुलाई, 2017
सेवा में,
चिकित्सा अधीक्षक,
राजकीय चिकित्सालय,
विकास नगर, नई दिल्ली–110018
विषय: चिकित्सालय की सुविधाओं पर संतोष एवं सुधार हेतु दो सुझाव।
महोदय,
मैं विकास नगर का निवासी हूँ। हाल ही में अपने परिवार के सदस्य के उपचार के लिए आपके चिकित्सालय आने का अवसर मिला। वहाँ उपलब्ध सुविधाओं और कर्मचारियों की सेवाभावना से मुझे बहुत संतोष हुआ। चिकित्सकों ने रोगी की समस्या ध्यानपूर्वक सुनी और उपचार के विषय में स्पष्ट जानकारी दी। जाँच की सुविधा, स्वच्छ परिसर तथा बैठने और पीने के पानी की व्यवस्था से रोगियों और उनके परिजनों को सुविधा मिलती है। परिचारकों का सहयोगपूर्ण व्यवहार भी सराहनीय है।
चिकित्सालय को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए मैं दो सुझाव प्रस्तुत करना चाहता हूँ। पहला, व्यस्त समय में अतिरिक्त पंजीकरण काउंटर खोला जाए और क्रमांक के अनुसार रोगियों को बुलाया जाए। इससे लंबी कतारें घटेंगी तथा बुजुर्गों और अस्वस्थ व्यक्तियों को अनावश्यक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी।
दूसरा, औषधि-वितरण कक्ष के बाहर उपलब्ध दवाओं की प्रतिदिन अद्यतन सूची लगाई जाए और आवश्यक दवाओं का पर्याप्त भंडार रखा जाए। इससे रोगियों को सही जानकारी मिलेगी और उन्हें बार-बार बाहर की दुकानों पर नहीं जाना पड़ेगा।
आशा है कि आप इन सुझावों पर विचार करेंगे। आपकी पूरी टीम को समर्पित सेवा के लिए धन्यवाद।
भवदीय,
अमित कुमार
निवासी, विकास नगर

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में चिकित्सालय की सुविधाओं पर संतोष और दो सुझाव को उचित औपचारिक प्रारूप में प्रस्तुत किया गया है। स्पष्ट अनुच्छेदों और विनम्र भाषा से पत्र का उद्देश्य पूरा होता है।

त्वरित सुझाव: पत्र के विषय और मुख्य कथ्य में प्रश्न के सभी निर्देश समेटें; सुझाव माँगे जाने पर उन्हें स्पष्ट रूप से लिखें और उनसे होने वाला लाभ भी बताएँ।

7. 'बढ़ता आतंकवाद मानवता के लिए खतरा' विषय पर एक आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख किसी सामाजिक विषय का तर्कपूर्ण विवेचन है। इसमें आकर्षक शीर्षक, लेखक का नाम, विषय का परिचय, कारण, प्रभाव और समाधान क्रमबद्ध रूप में आते हैं।
- आतंकवाद पर लिखते समय हिंसा की निंदा के साथ मानवीय मूल्यों, सामाजिक एकता और व्यावहारिक उपायों का विवेचन आवश्यक है। किसी पूरे समुदाय को दोषी ठहराना तर्कसंगत नहीं है।

चरण 1: प्रारूप और विषय की रूपरेखा शीर्षक के बाद लेखक का नाम दें। भूमिका में आतंकवाद का अर्थ स्पष्ट करें। मुख्य भाग में निर्दोष लोगों पर उसके प्रभाव, भय के वातावरण और विकास में बाधा का उल्लेख करें। अंत में सुरक्षा, शिक्षा, संवाद और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के उपाय प्रस्तुत करें।

चरण 2: पूर्ण नमूना आलेख **बढ़ता आतंकवाद मानवता के लिए खतरा**

लेखक: अजय कुमार

मनुष्य की सभ्यता प्रेम, सहयोग और विश्वास से आगे बढ़ी है। आतंकवाद इन्हीं आधारों पर प्रहार करता है। राजनीतिक या वैचारिक उद्देश्य पूरा करने के लिए निर्दोष लोगों पर हिंसा करके भय फैलाना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

आतंकी घटनाओं में केवल जानें नहीं जातीं; परिवार उजड़ते हैं, बच्चे असुरक्षित होते हैं और समाज का परस्पर विश्वास टूटता है। विद्यालय, बाजार और सार्वजनिक यातायात जैसे सामान्य जीवन के स्थान भी भय के केंद्र बन जाते हैं। व्यापार और पर्यटन प्रभावित होते हैं तथा विकास के संसाधन सुरक्षा संबंधी आवश्यकताओं में लगते हैं। किसी एक देश में जन्मा आतंक सीमाओं के पार भी विनाश फैला सकता है।

कट्टरता, भ्रामक प्रचार, हथियारों की उपलब्धता और युवाओं का शोषण इस संकट को बढ़ाते हैं। इसलिए केवल सैन्य कार्रवाई पर्याप्त नहीं है। प्रभावी खुफिया तंत्र, आतंक के वित्तीय स्रोतों पर रोक और देशों के बीच सहयोग आवश्यक हैं। साथ ही शिक्षा में विवेक, सहिष्णुता और मानवाधिकारों का सम्मान विकसित करना होगा। युवाओं को अवसर और समाज में न्यायपूर्ण व्यवहार भी चाहिए।

नागरिकों को अफवाहें फैलाने और किसी धर्म या समुदाय को सामूहिक रूप से दोषी ठहराने से बचना चाहिए। सतर्कता और सामाजिक एकता साथ चलें, तभी आतंक फैलाने वालों की मंशा विफल होगी। मानवता की रक्षा का मार्ग न्याय, सहयोग और शांति से होकर जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष उपर्युक्त आलेख आतंकवाद के मानवीय और सामाजिक प्रभावों का विवेचन करते हुए सुरक्षा, न्याय और एकता पर आधारित समाधान प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: आलेख में समस्या का वर्णन करने के बाद ठोस उपाय अवश्य दें; नारे और भावुकता तर्कपूर्ण विवेचन का स्थान नहीं ले सकते।

अथवा

7. 'भारत में क्रिकेट का भविष्य' विषय पर एक आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में विषय के वर्तमान स्वरूप, संभावनाओं और चुनौतियों का संतुलित विवेचन किया जाता है। शीर्षक और लेखक के नाम के बाद विचार क्रमबद्ध अनुच्छेदों में रखें।
- खेल के भविष्य पर विचार करते समय प्रतिभा, प्रशिक्षण, आधारभूत सुविधाएँ और निष्पक्ष चयन जैसे आधार महत्त्वपूर्ण होते हैं। केवल लोकप्रियता भविष्य की सफलता की गारंटी नहीं है।

चरण 1: प्रारूप और विचारों की योजना शीर्षक और लेखक का नाम लिखें। भूमिका में भारत में क्रिकेट की लोकप्रियता बताएँ। मुख्य भाग में युवा प्रतिभा, प्रशिक्षण, महिला क्रिकेट तथा छोटे शहरों की संभावनाएँ रखें। व्यावसायिक दबाव, पक्षपात और सुविधाओं की कमी

का विवेचन करके सुधारों के साथ समापन करें।

चरण 2: पूर्ण नमूना आलेख **भारत में क्रिकेट का भविष्य**

लेखक: अजय कुमार

भारत में क्रिकेट केवल खेल नहीं, करोड़ों लोगों की रुचि और उत्साह का विषय है। मैदानों से लेकर गलियों तक बच्चों को बल्ले और गेंद के साथ देखा जा सकता है। यह व्यापक आकर्षण संकेत देता है कि देश में क्रिकेट के विकास की संभावनाएँ बहुत बड़ी हैं। किंतु उज्ज्वल भविष्य के लिए उत्साह को सही दिशा देना आवश्यक है।

भारत की सबसे बड़ी शक्ति उसकी युवा प्रतिभा है। छोटे नगरों और गाँवों में भी प्रतिभाशाली खिलाड़ी हैं। यदि उन्हें अच्छे मैदान, प्रशिक्षक, पौष्टिक आहार और नियमित प्रतियोगिताएँ मिलें, तो राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचने का मार्ग खुल सकता है। विद्यालयों में पढ़ाई और खेल का संतुलन भी जरूरी है, जिससे खिलाड़ी अपने भविष्य को लेकर अनावश्यक भय में न रहें।

महिला क्रिकेट को समान प्रशिक्षण, सुविधाएँ और प्रोत्साहन देना खेल के विस्तार की महत्त्वपूर्ण शर्त है। घरेलू प्रतियोगिताओं को मजबूत बनाकर और चयन में पारदर्शिता रखकर योग्य खिलाड़ियों को अवसर देना चाहिए। खेल संबंधी वैज्ञानिक प्रशिक्षण और चोट से बचाव पर ध्यान देने से खिलाड़ियों का प्रदर्शन बेहतर हो सकता है।

क्रिकेट की लोकप्रियता के साथ चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं। अत्यधिक व्यावसायिकता, लगातार मैचों का दबाव तथा खेल भावना की उपेक्षा नुकसान पहुँचा सकती है। अनुशासन, ईमानदारी और निष्पक्ष निर्णय को सर्वोपरि रखना होगा।

भारत में क्रिकेट का भविष्य आशाजनक है, पर उसकी नींव जमीनी स्तर पर बनेगी। जब अवसर प्रतिभा के अनुरूप मिलेंगे और खेल का आनंद परिणाम से ऊपर रहेगा, तब नई पीढ़ी भारतीय क्रिकेट को और समृद्ध करेगी।

चरण 3: निष्कर्ष भारत में क्रिकेट की संभावनाएँ व्यापक हैं; सुविधाओं का विस्तार, निष्पक्ष चयन और खेल भावना उन संभावनाओं को स्थायी उपलब्धियों में बदल सकते हैं।

त्वरित सुझाव: भविष्य संबंधी आलेख में केवल प्रशंसा न करें; संभावनाओं के साथ बाधाएँ और उन्हें दूर करने के व्यावहारिक उपाय भी लिखें।

---

8. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,
बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी
जीविका विहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहैं एक एकन सों 'कहाँ जाई, का करी?'
वेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ विलोकिअत,
साँकरे सबैं पै, राम! रावरें कृपा करी।
दारिद-दसानन दबाई दुनी, दीनबन्धु!
दुरित-दहन देखि तुलसी हहा करी।।

[8 अंक]

8(क). काव्यांश में प्रकृति और शासन की किस विषमता का उल्लेख किया गया है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश का आशय उसके शब्दों और चित्रित परिस्थितियों से स्पष्ट किया जाता है। यहाँ किसान, भिखारी, व्यापारी और सेवक सभी जीविका के संकट में हैं।
- प्रकृति और शासन की विषमता का उत्तर सामाजिक दुर्दशा से जोड़ना चाहिए; काव्यांश किसी निश्चित राजा, वर्ष या प्राकृतिक आपदा का नाम नहीं बताता।

चरण 1: प्रकृति की प्रतिकूलता का संकेत 'खेती न किसान को' में खेती का लाभ न मिलना और अन्नोत्पादन से जीविका न चलना व्यक्त हुआ है। इससे प्राकृतिक प्रतिकूलता तथा उससे उपजे अभाव की स्थिति का संकेत मिलता है। अन्न और आजीविका का संकट

समाज के अन्य वर्गों को भी प्रभावित करता है।

चरण 2: शासन की अव्यवस्था और सामूहिक परिणाम व्यापारी को व्यापार और सेवक को नौकरी नहीं मिल रही; भिखारी को भिक्षा तक नहीं मिलती। ये स्थितियाँ ऐसी शासन-व्यवस्था की विषमता प्रकट करती हैं जिसमें जनता की आजीविका और संरक्षण का समुचित प्रबंध नहीं है। लोग चिंता में एक-दूसरे से पूछते हैं कि कहाँ जाएँ और क्या करें।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में प्रकृति की प्रतिकूलता से खेती के संकट और शासन की अव्यवस्था से रोजगार व आजीविका के अभाव का उल्लेख है। फलतः समाज के सभी वर्ग दरिद्रता और चिंता से पीड़ित हैं।

त्वरित सुझाव: 'खेती न किसान को' और 'न चाकर को चाकरी' को आधार बनाकर क्रमशः कृषि-संकट तथा रोजगार की अव्यवस्था समझाएँ।

8(ख). यहाँ दशानन किसे माना गया है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रूपक में उपमेय पर उपमान का सीधा आरोप होता है। 'दारिद-दसानन' में दरिद्रता को रावण के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
- उत्तर में केवल प्रतीक का नाम बताना पर्याप्त नहीं; उसके आधार और प्रसंग से उसका संबंध भी स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: दशानन का अभिप्राय पहचानना यहाँ 'दशानन' दरिद्रता को माना गया है। 'दारिद-दसानन दबाई दुनी' में कवि कहता है कि गरीबी ने पूरी दुनिया को अपने वश में करके दबा रखा है। इसलिए इस प्रसंग में दशानन का सीधा संकेत निर्धनता की ओर है।

चरण 2: तुलना का कारण समझाना जिस प्रकार रावण का आतंक और अत्याचार लोगों को पीड़ित करता था, उसी प्रकार दरिद्रता किसान, भिखारी, व्यापारी और सेवक सबको असहाय बना रही है। जीविका छिनने से लोग चिंता और दुःख में डूबे हैं। इसी सर्वव्यापी उत्पीड़न के कारण गरीबी को दशानन कहा गया है। कवि दीनबंधु राम से इस संकट को दूर करने की प्रार्थना करता है।

चरण 3: निष्कर्ष दरिद्रता को दशानन माना गया है, क्योंकि वह रावण के समान समस्त समाज को दबाकर कष्ट दे रही है। कवि राम की कृपा से इस दरिद्रता और दुःख के नाश की कामना करता है।

त्वरित सुझाव: 'दारिद-दसानन' को खोलकर पहले दरिद्रता लिखें, फिर उसके रावण-सदृश उत्पीड़न का कारण बताएँ; केवल रावण की कथा न लिखें।

8(ग). कवि क्यों व्यथित है? उसकी व्यथा का निराकरण कैसे हो सकता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर काव्यांश में व्यक्त भावों और उनके प्रसंग पर आधारित है।
- मुख्य शब्दों का आशय समझकर कारण और परिणाम को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: कवि की व्यथा का कारण कवि समाज में फैली दरिद्रता, बेरोजगारी और जीविका के संकट को देखकर व्यथित है। किसान को खेती से लाभ नहीं मिलता, भिखारी को भीख नहीं मिलती, व्यापारी का व्यापार नहीं चलता और सेवक को नौकरी नहीं मिलती। सभी आजीविका से वंचित होकर चिंता में डूबे हैं। दूसरों का यह कष्ट देखकर संवेदनशील तुलसीदास स्वयं भी दुखी होकर पुकार उठते हैं।

चरण 2: व्यथा के निराकरण का उपाय कवि राम को दीनबंधु कहकर उनकी कृपा की प्रार्थना करता है। वेद-पुराण और लोकानुभव बताते हैं कि संकट में पड़े लोगों पर राम कृपा करते आए हैं। इसलिए कवि को विश्वास है कि राम की करुणा से दरिद्रता और उससे उत्पन्न दुख दूर हो सकते हैं तथा असहाय लोगों को सहारा मिल सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष जनता की दरिद्रता और जीविका का संकट कवि की व्यथा का कारण है; दीनबंधु राम की कृपा से इसका निराकरण संभव है।

त्वरित सुझाव: व्यथा के कारण में दरिद्रता और जीविका-संकट, तथा उसके उपाय में दीनबंधु राम की कृपा अवश्य जोड़ें।

8(घ). समाज की दरिद्रता के बारे में कवि के कथन को अपने शब्दों में चित्रित कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर काव्यांश में व्यक्त भावों और उनके प्रसंग पर आधारित है।
- मुख्य शब्दों का आशय समझकर कारण और परिणाम को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: समाज के विभिन्न वर्गों की दशा कवि के अनुसार दरिद्रता ने समाज के सभी मेहनतकश और आश्रित वर्गों को घेर लिया है। किसान खेती नहीं कर पा रहा, भिखारी को भीख नहीं मिल रही, व्यापारी का व्यापार ठप है और नौकरी चाहने वाले सेवक को काम नहीं मिलता। किसी भी वर्ग के पास निर्वाह का भरोसेमंद साधन नहीं बचा है।

चरण 2: असहायता और चिंता का चित्र जीविका छिन जाने से लोग चिंता और दुख में घुल रहे हैं। वे एक-दूसरे से पूछते हैं कि कहाँ जाएँ और क्या करें। दरिद्रता मानो रावण की तरह सारी दुनिया को दबाए हुए है। इससे जनता की आर्थिक बदहाली के साथ उसकी निरुपायता भी प्रकट होती है; इसी सामूहिक कष्ट को देखकर तुलसीदास करुण पुकार करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष दरिद्रता ने खेती, व्यापार, भीख और नौकरी सभी साधनों को बाधित कर दिया है; आजीविकाहीन लोग चिंता में डूबे और निरुपाय हैं।

त्वरित सुझाव: किसान, भिखारी, व्यापारी और सेवक के जीविका-संकट को गिनाकर लोगों की कहाँ जाएँ, क्या करें वाली निरुपायता स्पष्ट करें।

अथवा

8. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

मैं रोया, इसको तुम कहते हो गाना
मैं फूट पड़ा, तुम कहते छंद बनाना;
क्यों कवि कहकर संसार मुझे अपनाए
मैं दुनियाँ का हूँ एक नया दीवाना।
मैं दीवानों का वेश लिए फिरता हूँ,
मैं मादकता निःशेष लिए फिरता हूँ;
जिसको सुनकर जग झूम, झुके, लहराए
मैं मस्ती का संदेश लिए फिरता हूँ [8 अंक]

8(क). जिन्हें हम गीत व छंद कहते हैं वे कवि की दृष्टि से क्या हैं? वह ऐसा क्यों मानता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर काव्यांश में व्यक्त भावों और उनके प्रसंग पर आधारित है।
- मुख्य शब्दों का आशय समझकर कारण और परिणाम को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: गीत और छंद का वास्तविक रूप जिन रचनाओं को संसार गीत और छंद कहता है, वे कवि की दृष्टि में उसके हृदय का रोना और भीतर उमड़ते भावों का फूट पड़ना हैं। काव्यांश में वह स्पष्ट कहता है कि उसके रोने को लोग गाना तथा उसके भावावेश को छंद बनाना समझते हैं। इस प्रकार रचना उसके निजी अनुभवों की सहज अभिव्यक्ति है।

चरण 2: कवि की इस मान्यता का कारण कवि जानबूझकर केवल कवि कहलाने के लिए रचना नहीं करता। उसके मन में संचित पीड़ा और तीव्र संवेदना स्वाभाविक रूप से शब्दों में बह निकलती है। श्रोता इस अभिव्यक्ति में गीत का सौंदर्य देखते हैं, जबकि कवि उसके पीछे अपने हृदय की अनुभूति पहचानता है। इसी कारण वह संसार की साहित्यिक पहचान से अलग अपना भावात्मक सत्य सामने रखता है।

चरण 3: निष्कर्ष गीत और छंद कवि के लिए उसके अंतर्मन की पीड़ा तथा भावों का सहज विस्फोट हैं; वे उसके अपने अनुभवों से स्वतः उपजते हैं।

त्वरित सुझाव: गीत को हृदय के रोने और छंद को भावों के फूट पड़ने से जोड़ें; फिर उनकी सहज उत्पत्ति को इसका कारण बताएँ।

8(ख). कवि स्वयं को दुनिया का नया दीवाना क्यों कहता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर काव्यांश में व्यक्त भावों और उनके प्रसंग पर आधारित है।
- मुख्य शब्दों का आशय समझकर कारण और परिणाम को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: संसार से भिन्न अपनी पहचान कवि स्वयं को दुनिया का नया दीवाना कहता है क्योंकि वह रूढ़ सामाजिक दृष्टि और सामान्य सांसारिक व्यवहार से अलग प्रेम, संवेदना तथा मस्ती में जीता है। संसार उसे कवि कहकर अपनाना चाहता है, पर वह केवल इस उपाधि से अपनी पहचान नहीं बनाता। वह अपने भावों में डूबा हुआ एक स्वतंत्र और अनोखा व्यक्ति है।

चरण 2: दीवानगी का संदेश उसकी दीवानगी निरुद्देश्य उन्माद नहीं, बल्कि जीवन के प्रति प्रेमपूर्ण मस्ती है। वह दीवानों का वेश और भरपूर मादकता लिए घूमता है तथा दूसरों को भी अपने भावलोक में शामिल करता है। उसके भीतर ऐसी अनुभूति है जो जग को झूमने और लहराने के लिए प्रेरित करती है। इसी अनोखी जीवन-दृष्टि के कारण वह अपने को नया दीवाना कहता है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रेम, संवेदना और मस्ती से भरी अपनी स्वतंत्र जीवन-दृष्टि तथा संसार से अलग पहचान के कारण कवि स्वयं को नया दीवाना कहता है।

त्वरित सुझाव: नया दीवाना समझाते समय प्रेम और मस्ती के साथ रूढ़ सांसारिकता से अलग कवि की स्वतंत्र जीवन-दृष्टि जोड़ें।

8(ग). कवि क्या चाहता है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर काव्यांश में व्यक्त भावों और उनके प्रसंग पर आधारित है।
- मुख्य शब्दों का आशय समझकर कारण और परिणाम को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: कवि की अभिलाषा कवि चाहता है कि लोग उसे केवल कवि की उपाधि देकर न पहचानें, बल्कि उसकी सहज अनुभूतियों और प्रेममय दीवानगी को समझें। वह संसार में मस्ती का संदेश फैलाना चाहता है। उसके हृदय से निकलने वाली भावधारा को सुनकर लोग आनंद से झूमें और जीवन की उमंग अनुभव करें, यही उसकी अभिलाषा है।

चरण 2: अभिलाषा का कारण कवि के लिए गीत भीतर के भावों की सहज अभिव्यक्ति हैं। वह अपनी अनुभूतियों को केवल अपने तक सीमित नहीं रखना चाहता। उसकी मादकता दूसरों को भी प्रभावित करती है; इसलिए वह अपने प्रेम और उल्लास में समूचे संसार को सहभागी बनाना चाहता है। काव्यांश की अंतिम पंक्ति उसके इसी मस्तीपूर्ण जीवन-संदेश को स्पष्ट करती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि अपनी प्रेममय दीवानगी को समझवाना और मस्ती का संदेश फैलाना चाहता है, ताकि संसार भी उसकी अनुभूति और आनंद में सहभागी हो।

त्वरित सुझाव: चाहता है के उत्तर में मस्ती का संदेश फैलाना और क्यों के उत्तर में संसार को अपने आनंद का सहभागी बनाना लिखें।

8(घ). कवि के संदेश का लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर काव्यांश में व्यक्त भावों और उनके प्रसंग पर आधारित है।
- मुख्य शब्दों का आशय समझकर कारण और परिणाम को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: लोगों पर भावात्मक प्रभाव कवि का मस्ती भरा संदेश सुनकर लोग आनंद और भावावेश से भर उठते हैं। काव्यांश में जग के झूमने, झुकने और लहराने का उल्लेख इसी प्रभाव को व्यक्त करता है। उसके भाव श्रोताओं के भीतर ऐसी हलचल पैदा करते हैं कि वे अपनी सामान्य स्थिति से ऊपर उठकर उसकी अनुभूति में रम जाते हैं।

चरण 2: झूमने और लहराने का आशय यह प्रभाव केवल शब्दों की प्रशंसा तक सीमित नहीं है। लोग कवि के प्रेम, उल्लास और मादकता से प्रभावित होकर उसके संदेश को हृदय से ग्रहण करते हैं। उनका झूमना आनंदपूर्ण तन्मयता और लहराना उमंग का सूचक है। इस प्रकार कवि की व्यक्तिगत अनुभूति व्यापक होकर जग को भी अपने मस्ती भरे भावलोक का सहभागी बना देती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि के मस्ती भरे संदेश से लोग आनंदविभोर होकर झूमते, झुकते और लहराते हैं तथा उसके भावों में तन्मय हो जाते हैं।

त्वरित सुझाव: जग के झूमने, झुकने और लहराने को केवल शारीरिक चेष्टा न समझें; उसे आनंदविभोर तन्मयता और उमंग से जोड़ें।

9(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'आत्मपरिचय' कविता में "मैं और, और जग और कहाँ का नाता" से कवि की किस मनोदशा का उल्लेख किया गया है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि की मनोदशा समझने के लिए उसके प्रेमपूर्ण अंतर्जगत और व्यवहारप्रधान बाह्य संसार के अंतर को देखना चाहिए।
- यहाँ अलगाव का अर्थ संवेदनहीनता नहीं, अपनी अनुभूति और स्वतंत्र जीवन-दृष्टि के प्रति निष्ठा है।

चरण 1: पंक्ति में व्यक्त मानसिक स्थिति इस पंक्ति में कवि संसार से अपने मानसिक और भावात्मक अलगाव की अनुभूति व्यक्त करता है। उसके जीवन का आधार प्रेम, आत्मीयता और हृदय की अनुभूतियाँ हैं, जबकि संसार का व्यवहार उसे इनसे भिन्न दिखाई देता है। इसलिए वह अपने और जगत के बीच सहज मेल नहीं पाता। उसे अनुभव होता है कि उसकी रुचियाँ, आकांक्षाएँ और जीवन जीने का ढंग सामान्य सामाजिक अपेक्षाओं से अलग हैं।

चरण 2: अलगाव के साथ जुड़ी स्वच्छंदता स्पष्ट करें कवि अपने मन के भावों को दबाकर जगत की रूढ़ धारणाओं के अनुकूल नहीं बनना चाहता। वह अपनी अनुभूतियों का गायक है और अपने भीतर के प्रेम तथा सुख-दुख को लेकर जीता है। इसीलिए पंक्ति में व्यथा और एकाकीपन के साथ आत्मनिष्ठा तथा स्वच्छंदता भी है। फिर भी वह जगत के प्रति दायित्व से पूरी तरह विमुख नहीं होता; सांसारिक जीवन का भार उठाते हुए अपने हृदय की स्वतंत्रता बनाए रखता है। इस कथन में कवि का निजी व्यक्तित्व सामने आता है; वह अपनी संवेदना की सच्चाई के लिए सामाजिक समानता का आग्रह स्वीकार नहीं करता।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति कवि की संसार से वैचारिक-भावात्मक असंगति, अकेलेपन और अपनी प्रेममयी स्वतंत्र जीवन-दृष्टि पर अडिग रहने की मनोदशा प्रकट करती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल संसार से घृणा न लिखें; प्रेमपूर्ण अंतर्जगत, असंगति और स्वच्छंदता को जोड़ें।

9(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'छोटा मेरा खेत' कविता में कवि के और किसान के कार्य में समानता किस प्रकार प्रदर्शित की गई है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में कवि ने काव्य-रचना की प्रक्रिया को खेती के रूपक से समझाया है।
- कागज़, विचार, कल्पना और शब्द क्रमशः खेत, बीज, पोषण और अंकुरों के समतुल्य हैं।

चरण 1: सृजन की आरंभिक समानता बताएँ किसान खेत तैयार करके उसमें बीज बोता है। उसी प्रकार कवि कागज़ के पन्ने पर किसी अनुभूति या विचार के बीज से रचना आरंभ करता है। भावों का कोई झोंका प्रेरणा बनकर आता है और कविता के बीज को जन्म देता है। इस प्रकार दोनों के कार्य का आधार संभावनाओं से भरा एक छोटा बीज और उसके विकसित होने के लिए अनुकूल भूमि है। कवि का छोटा खेत कागज़ का पन्ना है।

चरण 2: पोषण, विकास और फल की तुलना करें किसान श्रम, सिंचाई और देखभाल से बीज को फसल बनाता है; कवि कल्पना, भावना और साधना से अनुभव को कविता का रूप देता है। कविता में शब्दों के अंकुर फूटते हैं, पल्लव-पुष्प बनते हैं और अंततः रसपूर्ण फल प्राप्त होते हैं। दोनों सृजनकर्ता परिश्रम और धैर्य से उपयोगी उपज देते हैं। अंतर यह है कि खेत की फसल कटने पर समाप्त हो जाती है, पर कविता का रस पाठकों में बार-बार बँटने पर भी कम नहीं होता। उसकी अनुभूति समय के साथ नए पाठकों को तृप्त करती रहती है। खेती में अन्न शरीर का पोषण करता है और काव्य में रस मन तथा संवेदना को समृद्ध करता है। दोनों की उपज दूसरों के काम आती है।

चरण 3: निष्कर्ष किसान अन्न की फसल उगाता है और कवि अनुभवों से शब्दों तथा रस की फसल रचता है; कविता ने दोनों की सृजन-प्रक्रिया को समान रूपक में प्रस्तुत किया है।

त्वरित सुझाव: खेत से कागज़, बीज से विचार और फसल से कविता का संबंध क्रम में लिखें; अंत में काव्य-रस की अक्षयता बताएँ।

9(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'उषा' कविता में गाँव की सुबह का गतिशील शब्दचित्र कैसे है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि ने भोर के बदलते रंगों को ग्रामीण घरेलू जीवन की परिचित वस्तुओं के बिंबों से मूर्त किया है।
- गतिशीलता क्रमशः बदलते प्रकाश, रंग तथा अंत में सूर्योदय से बनती है; केवल वस्तुओं की सूची देना पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: ग्रामीण जीवन के बिंब स्पष्ट करें भोर का आकाश पहले नीले शंख जैसा दिखाई देता है। उसके बाद राख से लीपे गीले चौके का बिंब आता है, जो गाँव के घर-आँगन का परिचित दृश्य है। हलकी लालिमा उभरने पर आकाश बहुत काली सिल पर थोड़ी-सी लाल केसर मले जाने जैसा लगता है। कहीं वह स्लेट पर लाल खड़िया चाक मल दिए जाने का आभास देता है। चौका, सिल और स्लेट जैसे सहज बिंब सुबह के रंगों को पाठक के प्रत्यक्ष अनुभव से जोड़ते हैं।

चरण 2: बदलते दृश्य से गति दिखाएँ ये चित्र स्थिर नहीं रहते। अंधकार की नीली-काली छाया में धीरे-धीरे उजाला और लालिमा फैलती है। फिर नीले जल में किसी गोरी देह के झिलमिलाने का बिंब प्रकाश की चमक और हलचल का अनुभव कराता है। अंत में सूर्योदय होते ही उषा का जादू टूट जाता है। इस क्रम में रात से सुबह की ओर बढ़ता समय और पल-पल बदलता आकाश मूर्त हो उठता है। कवि ने छोटे-छोटे दृश्य जोड़कर ग्रामीण परिवेश से परिचित पाठक के सामने जीवंत प्रभात उपस्थित किया है।

चरण 3: निष्कर्ष ग्रामीण घरेलू बिंबों, बदलते रंगों, झिलमिलाते प्रकाश और अंततः सूर्योदय के क्रम से उषा का सजीव तथा गतिशील शब्दचित्र बनता है।

त्वरित सुझाव: बिंबों को भोर के रंग बदलने के क्रम में समझाएँ और जादू टूटने को सूर्योदय से जोड़ें।

10. निम्नलिखित काव्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी,
हाथों पे झुलाती है उसे गोद भरी।
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी।। [6 अंक]

10(क). काव्यांश का भाव-सौंदर्य लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य में दृश्य के पीछे व्यक्त मानवीय संवेदना और उसके प्रभाव को समझाया जाता है।
- इस काव्यांश का केंद्र माँ का वात्सल्य और उसकी गोद में बच्चे का निश्छल आनंद है।

चरण 1: माँ के वात्सल्य को स्पष्ट करें आँगन में खड़ी माँ अपने सुंदर और प्रिय बच्चे को गोद में लिए हुए है। उसे हाथों पर झुलाना और बार-बार हवा में उछालकर खिलाना माँ की ममता तथा आत्मीयता को मूर्त करता है। बच्चे के लिए प्रयुक्त चाँद के टुकड़े का संबोधन बताता है कि वह माँ को कितना प्यारा लगता है। घरेलू जीवन का साधारण क्षण सघन प्रेम से भर गया है।

चरण 2: बच्चे के उल्लास का प्रभाव बताएँ माँ की चेष्टाओं से बच्चा खिलखिलाकर हँसता है और उसकी हँसी से आँगन गूँज उठता है। इसमें बालपन का निष्कपट उल्लास तथा माँ-बच्चे के बीच सुरक्षा और विश्वास का मधुर संबंध झलकता है। कवि ने कोई बड़ा कथन किए बिना दृश्य के माध्यम से मातृस्नेह और पारिवारिक आनंद का सौंदर्य व्यक्त किया है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का भाव-सौंदर्य माँ के सहज वात्सल्य, बच्चे की निश्छल खिलखिलाहट और उनसे आनंदमय बने घरेलू वातावरण में है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य में माँ की चेष्टा, बच्चे की प्रतिक्रिया और उससे उपजे वात्सल्य को आपस में जोड़ें।

10(ख). काव्यांश की अलंकार योजना पर प्रकाश डालिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अलंकार की पहचान उसके शब्दगत या अर्थगत आधार और काव्यांश के सटीक उदाहरण से करनी चाहिए।
- रूपक में उपमेय पर उपमान का सीधा आरोप होता है; पुनरुक्तिप्रकाश में शब्द की पुनरावृत्ति प्रभाव बढ़ाती है।

चरण 1: रूपक का आधार समझाएँ बच्चे को चाँद का टुकड़ा कहा गया है। यहाँ बच्चे और चाँद के टुकड़े के बीच जैसा या समान जैसे तुलना-सूचक शब्द नहीं हैं; बच्चे पर सीधे चाँद के टुकड़े का रूप आरोपित है। इसलिए यह रूपक अलंकार है। इससे बच्चे की सुंदरता, कोमलता और माँ के लिए उसका अत्यंत प्रिय होना व्यक्त होता है।

चरण 2: पुनरावृत्ति की योजना स्पष्ट करें रह-रह में रह शब्द की पुनरावृत्ति होने से पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है। यह पुनरावृत्ति माँ द्वारा बच्चे को बार-बार हवा में उछालकर खिलाने की निरंतरता को उभारती है। इस प्रकार पहला अलंकार बच्चे के मनोहर रूप को और दूसरा माँ-बच्चे की क्रीड़ा की आवृत्ति तथा लय को प्रभावशाली बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष चाँद के टुकड़े में रूपक तथा रह-रह में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है; दोनों मिलकर वात्सल्य-दृश्य को सुंदर और लयपूर्ण बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: हर अलंकार के साथ उसका उदाहरण और पहचान का कारण लिखें; केवल अलंकारों के नाम पर्याप्त नहीं हैं।

10(ग). भाषागत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषागत विशेषताओं में शब्दावली, मुहावरा, ध्वनि, लय और अभिव्यक्ति की चित्रात्मकता को उदाहरण सहित देखा जाता है।
- इस काव्यांश में सहज हिंदुस्तानी बोलचाल और घरेलू जीवन की भाषा वात्सल्य को स्वाभाविक बनाती है।

चरण 1: शब्दावली और सहजता बताएँ काव्यांश की भाषा सरल, सहज और बोलचाल के निकट है। आँगन, गोद, हाथों और बच्चे जैसे परिचित शब्द घरेलू परिवेश को आत्मीय बनाते हैं। लोका देती है जैसा लोक-प्रचलित प्रयोग बच्चे को हवा में उछालकर खिलाने की क्रिया को सजीव करता है। चाँद का टुकड़ा जैसी मुहावरेदार अभिव्यक्ति बच्चे के सौंदर्य और प्रियता को सहज ढंग से व्यक्त करती है।

चरण 2: लय और चित्रात्मकता का प्रभाव बताएँ खड़ी, भरी और हँसी के तुकांत प्रयोग से रुबाई में गेयता आती है। रह-रह की पुनरावृत्ति और खिलखिलाते शब्द की ध्वनि दृश्य को लय तथा आनंद देती है। झुलाने, हवा में उछालने और हँसी गूँजने की क्रियाएँ भाषा को चित्रात्मक तथा गतिशील बनाती हैं। संक्षिप्त पंक्तियों में माँ-बच्चे का पूरा वात्सल्यपूर्ण दृश्य उभर आता है।

चरण 3: निष्कर्ष सहज हिंदुस्तानी शब्दावली, लोक-प्रयोग, मुहावरेदार अभिव्यक्ति, तुक-लय तथा चित्रात्मकता काव्यांश की प्रमुख भाषागत विशेषताएँ हैं।

त्वरित सुझाव: भाषा की हर विशेषता को इसी काव्यांश के शब्द से प्रमाणित करें, जैसे लोका देती है और रह-रह।

---

11. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

उस बल को नाम जो दो; पर निश्चय ही वह उस तल की वस्तु नहीं है जहाँ पर संसारी वैभव फलता-फूलता है। वह कुछ अपर जाति का तत्त्व है। लोग स्पिरिचुअल कहते हैं; आत्मिक, धार्मिक, नैतिक कहते हैं। मुझे योग्यता नहीं कि मैं उन शब्दों के अन्तर देखूँ और प्रतिपादन करूँ। मुझे शब्द से सरोकार नहीं। मैं विद्वान नहीं कि शब्दों पर अटकूँ। लेकिन इतना तो है कि तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहाँ उस बल का बीज नहीं है। बल्कि यदि उसी बल को सच्चा बल मानकर बात की जाय तो कहना होगा कि संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति की निर्बलता ही प्रमाणित होती है। निर्बल ही धन की ओर झुकता है। वह अबलता है। वह मनुष्य पर धन की और चेतन पर जड़ की विजय है। [8 अंक]

11(क). गद्यांश में किस बल की बात की गई है? उस बल की विशेषता लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आत्मिक बल का संबंध मनुष्य की आंतरिक स्वतंत्रता से है, बाहरी धन-संपत्ति से नहीं।
- संग्रह की तृष्णा और वैभव की चाह इस बल की विशेषता नहीं, बल्कि निर्बलता का लक्षण हैं।

चरण 1: बल की पहचान गद्यांश में मनुष्य के आत्मिक अथवा नैतिक बल की चर्चा है। लेखक कहता है कि लोग इसे स्पिरिचुअल, आत्मिक, धार्मिक या नैतिक कहते हैं। उसका आग्रह किसी एक नाम पर नहीं, बल्कि उस शक्ति के वास्तविक स्वरूप पर है।

चरण 2: विशेषता का विवेचन यह बल सांसारिक धन और वैभव से भिन्न है। जहाँ संग्रह की तृष्णा और बटोरने की इच्छा होती है, वहाँ इसका बीज नहीं होता। इसकी विशेषता मनुष्य को धन के आकर्षण से मुक्त रखकर उसकी आंतरिक स्वतंत्रता बनाए रखना है। धन की ओर झुकना इस शक्ति का प्रमाण नहीं हो सकता। इस बल का मूल्य बाहरी वैभव की मात्रा से तय नहीं होता।

चरण 3: निष्कर्ष गद्यांश में आत्मिक या नैतिक बल की बात है। उसकी विशेषता धन, संचय और वैभव की लालसा से मुक्त होना तथा धन के सामने न झुकना है।

त्वरित सुझाव: बल का नाम बताने के बाद उसकी पहचान तृष्णा के अभाव से जोड़कर लिखिए।

11(ख). व्यक्ति की निर्बलता कब और कैसे प्रमाणित होती है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- धन के प्रति झुकाव और संचय की तृष्णा को लेखक मनुष्य की आंतरिक निर्बलता मानता है।
- उत्तर में निर्बलता की स्थिति के साथ उसका कारण भी स्पष्ट करना है: धन का आकर्षण व्यक्ति पर हावी हो जाता है।

चरण 1: निर्बलता की स्थिति व्यक्ति की निर्बलता तब प्रमाणित होती है जब उसके भीतर धन बटोर रखने की तृष्णा और सांसारिक वैभव पाने की चाह प्रबल होती है। लेखक के अनुसार संग्रह की इच्छा को सच्चे आत्मबल की पहचान समझना भूल है।

चरण 2: निर्बलता का कारण ऐसा व्यक्ति धन की ओर झुकता है और उसका आकर्षण उसके मन को अपने अधीन कर लेता है। तब वह अपनी चेतना और विवेक से धन का उपयोग करने के बजाय धन के प्रभाव में आ जाता है। इसी आश्रित स्थिति को लेखक मनुष्य पर धन और चेतन पर जड़ की विजय कहता है। यह झुकाव आत्मबल के अभाव का परिचायक है।

चरण 3: निष्कर्ष संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति की निर्बलता प्रमाणित होती है, क्योंकि धन के आकर्षण में झुककर वह अपनी आंतरिक स्वतंत्रता खो देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कब के लिए संचय की चाह और कैसे के लिए धन के अधीन होने का संबंध दिखाइए।

11(ग). 'अपर जाति का तत्त्व' किसे कहा है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अपर जाति का तत्त्व ऐसी शक्ति है जिसकी प्रकृति सांसारिक वैभव से अलग है।
- लेखक शब्दों के भेद के स्थान पर आत्मिक बल की पहचान बताता है: तृष्णा में उसका बीज नहीं होता।

चरण 1: तत्त्व की पहचान लेखक ने आत्मिक अथवा नैतिक बल को अपर जाति का तत्त्व कहा है। यहाँ अपर का आशय सांसारिक संपत्ति और वैभव से अलग प्रकृति का होना है। लोग इसके लिए धार्मिक या स्पिरिचुअल जैसे नाम भी प्रयोग करते हैं।

चरण 2: भिन्नता का आधार सांसारिक वैभव धन और वस्तुओं के संचय में बढ़ता है, जबकि इस आत्मिक बल का बीज संचय की तृष्णा में नहीं होता। वैभव की लालसा व्यक्ति की कमजोरी दिखाती है। इसलिए इस शक्ति को धन के आधार पर नापा नहीं जा सकता; इसका स्वरूप बाहरी संपत्ति से स्वतंत्र है। इसलिए इसका संबंध व्यक्ति की आंतरिक शक्ति से है।

चरण 3: निष्कर्ष आत्मिक या नैतिक बल को अपर जाति का तत्त्व कहा गया है, क्योंकि उसका स्वरूप सांसारिक धन-वैभव से भिन्न है और संग्रह की लालसा में उसका विकास नहीं होता।

त्वरित सुझाव: अपर का अर्थ केवल श्रेष्ठ लिखकर न छोड़ें; सांसारिक वैभव से भिन्न प्रकृति समझाइए।

11(घ). आशय स्पष्ट कीजिए : 'वह मनुष्य पर धन की और चेतन पर जड़ की विजय है।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनुष्य चेतन और धन जड़ है; विवेकवान मनुष्य को धन का उपयोग अपने साधन के रूप में करना चाहिए।
- धन का आकर्षण जब मनुष्य के विवेक को दबा देता है, तब साधन उसके जीवन को नियंत्रित करने लगता है।

चरण 1: मनुष्य और धन का संबंध मनुष्य चेतन है, अर्थात उसमें विचार और विवेक की शक्ति है; धन जड़ वस्तु है। उचित स्थिति में मनुष्य अपने विवेक से धन का उपयोग करता है। धन जीवन का साधन है और उसका मूल्य मनुष्य की आवश्यकता की पूर्ति से जुड़ा है।

चरण 2: कथन का भावार्थ जब संचय की तृष्णा और वैभव की इच्छा मनुष्य पर हावी हो जाती है, तब उसका विवेक धन के आकर्षण के सामने झुक जाता है। वह धन को अपने अधीन रखने के बजाय स्वयं उसके अधीन हो जाता है। लेखक इसी उलटे संबंध को चेतन पर जड़ तथा मनुष्य पर धन की विजय कहता है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि धन की लालसा में मनुष्य का विवेक और आत्मबल दब जाते हैं। वह जड़ धन का स्वामी रहने के बजाय उसका अधीन बन जाता है।

त्वरित सुझाव: चेतन को मनुष्य और जड़ को धन से जोड़कर साधन के स्वामी बन जाने की स्थिति स्पष्ट कीजिए।

12(क). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए : बाज़ारूपन से लेखक का क्या आशय है? किस प्रकार के लोग इसे बढ़ावा देते हैं? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार दर्शन में आवश्यकताओं की पहचान मनुष्य को बाज़ार के आकर्षण से बचाती है।
- क्रयशक्ति का प्रदर्शन और अनावश्यक संचय बाज़ारूपन को बढ़ाते हैं।

चरण 1: बाज़ार का उपयोगी रूप बाज़ार दर्शन में लेखक बाज़ार की उपयोगिता को आवश्यक वस्तुएँ प्राप्त करने से जोड़ता है। मनुष्य अपनी जरूरत जानता हो और उसी के अनुसार वस्तु खरीदे तो बाज़ार उसके काम आता है। इस संबंध में आवश्यकता और उपयोगिता प्रमुख रहते हैं।

चरण 2: बाज़ारूपन का अर्थ बाज़ारूपन वह स्थिति है जिसमें वास्तविक जरूरत के स्थान पर आकर्षण, धन का प्रदर्शन और अनावश्यक वस्तुएँ बटोरने की इच्छा प्रधान हो जाती है। व्यक्ति वस्तु का उपयोग सोचकर नहीं, उसके आकर्षण से प्रभावित होकर खरीदता है। इस प्रकार बाज़ार का जादू उसकी इच्छा पर हावी हो जाता है।

चरण 3: बढ़ावा देने वाले लोग इसे वे लोग बढ़ावा देते हैं जिन्हें अपनी जरूरत का स्पष्ट बोध नहीं होता और जो पैसे की शक्ति या क्रयशक्ति के गर्व में खरीदारी करते हैं। वे अनावश्यक वस्तुएँ जुटाकर अपने धन और प्रतिष्ठा का प्रदर्शन करना चाहते हैं। इसके विपरीत अपनी जरूरत तक सीमित रहने वाले भगत जी जैसे लोग बाज़ार को सार्थक उपयोग देते हैं और उसके आकर्षण में नहीं बहते।

चरण 4: निष्कर्ष बाज़ारूपन आवश्यकता से अलग होकर आकर्षण, प्रदर्शन और संचय के लिए खरीदने की प्रवृत्ति है। पैसे के गर्व में अपनी जरूरत भूले हुए तथा अनावश्यक खरीदारी करने वाले लोग इसे बढ़ाते हैं।

त्वरित सुझाव: पहले जरूरत पर आधारित खरीद और फिर पैसे के प्रदर्शन वाली खरीद का अंतर बताइए।

12(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए : किन विवशताओं के कारण लछमिन को गाँव छोड़कर शहर जाना पड़ा? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भक्तिन के जीवन में पारिवारिक संकट, खेती की गिरती दशा और स्वाभिमान की रक्षा परस्पर जुड़े हैं।
- गाँव छोड़ने के कारणों में आर्थिक संकट और जमींदार द्वारा किया गया अपमान प्रमुख हैं।

चरण 1: पारिवारिक और आर्थिक पृष्ठभूमि लछमिन अर्थात भक्तिन का ग्रामीण जीवन लगातार कठिनाइयों से घिरा रहा। पति की मृत्यु के बाद परिवार और खेती की जिम्मेदारी उसके ऊपर आई। बड़ी बेटी के विधवा होने और उसके जीवन में आए संकटों ने भी घर की स्थिति को दुखपूर्ण बना दिया। इन परिस्थितियों में संपत्ति और खेती की पहले जैसी देखभाल कठिन हो गई।

चरण 2: खेती की दुर्दशा और लगान खेती बिगड़ने के साथ आमदनी घट गई और लगान चुकाना संभव नहीं रहा। लगान न चुका पाने पर जमींदार ने उसे बुलवाया और दिन भर कड़ी धूप में खड़ा रखा। यह केवल आर्थिक कष्ट नहीं, उसके स्वाभिमान पर गहरी चोट भी थी। कठिन परिश्रम करने वाली भक्तिन के लिए ऐसा अपमान असहनीय था।

चरण 3: शहर जाने का निर्णय इस अपमान और आर्थिक विवशता ने उसे गाँव से बाहर कमाने का रास्ता अपनाने को बाध्य किया। वह कमाई की आशा से शहर पहुँची, जहाँ बाद में महादेवी वर्मा के यहाँ सेवा करने लगी। इस प्रकार उसका शहर आना सुख-सुविधा की चाह का परिणाम नहीं, बल्कि बिगड़ती आर्थिक दशा और लगान के कारण मिले अपमान का परिणाम था।

चरण 4: निष्कर्ष खेती की दुर्दशा, लगान न चुका पाने और उसके कारण जमींदार द्वारा धूप में खड़ा रखकर किए गए अपमान से विवश होकर लछमिन कमाने के लिए शहर गई।

त्वरित सुझाव: कारणों को खेती की दुर्दशा, बकाया लगान और अपमान के क्रम में जोड़कर लिखिए।

12(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए : पहलवान के ढोलक की आवाज का पूरे गाँव पर क्या असर होता था? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी में ढोलक विपत्ति से संघर्ष करने की प्रेरणा और जीवन के प्रति विश्वास का प्रतीक है।
- महामारी की भयावह रातों में ध्वनि का प्रभाव ग्रामीणों की मानसिक स्थिति और सामूहिक साहस से जोड़कर समझना चाहिए।

चरण 1: गाँव में व्याप्त भय गाँव हैजे और मलेरिया की चपेट में था। लोग निर्धनता, भूख और बीमारी से असहाय हो गए थे। रात के सन्नाटे में कराहने और रोने की आवाजें वातावरण को और भयावह बना देती थीं। ऐसी स्थिति में पहलवान की झोंपड़ी से उठने वाली ढोलक की आवाज पूरे गाँव को सुनाई पड़ती थी।

चरण 2: ढोलक से मिलने वाला संबल ढोलक की लय ग्रामीणों के मन में छाए मृत्यु के भय को चुनौती देती थी। उसकी आवाज मानो उन्हें हार न मानने और विपत्ति से लड़ते रहने को कहती थी। निराश और भयभीत लोगों को उससे मानसिक सहारा मिलता तथा उनकी चेतना में जीवन के प्रति आशा जागती थी। पहलवान स्वयं भी अपने निजी दुःख के बीच ढोलक बजाता रहता था; इसलिए उसका संघर्ष दूसरों के लिए भी साहस का स्रोत बनता था।

चरण 3: प्रभाव की सीमा और महत्त्व ढोलक बीमारी को दूर नहीं कर सकती थी और न ही उससे भूख मिटती थी, किंतु वह लोगों के टूटते मन को संभालती थी। अँधेरी रात काटने के लिए उन्हें धैर्य और आत्मबल मिलता था। इस प्रकार उसकी आवाज मनोरंजन भर न होकर संकटग्रस्त गाँव की सामूहिक जीवनीशक्ति बन गई थी।

चरण 4: निष्कर्ष पहलवान की ढोलक की आवाज से ग्रामीणों को मृत्यु के आतंक और निराशा के बीच साहस, आशा तथा संघर्ष करते रहने की प्रेरणा मिलती थी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले महामारी का भय बताएँ, फिर ढोलक से मिलने वाले मानसिक साहस और जीवन की आशा को स्पष्ट करें।

12(घ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए : "मानचित्र पर लकीर खींच देने भर से जनता और जमीन नहीं बँट जाती"। 'नमक' कहानी के आधार पर तर्क सहित प्रतिपादित कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रज़िया सज्जाद ज़हीर की कहानी राजनीतिक सीमाओं से परे मनुष्यों की साझा स्मृतियों और आत्मीय संबंधों को सामने रखती है।
- कथन का समर्थन सिख बीबी की लाहौर से जुड़ी स्मृति और सीमाशुल्क अधिकारियों के जन्मभूमि के प्रति लगाव से होता है।

चरण 1: सिख बीबी का लाहौर से संबंध विभाजन के बाद भारत में रहने वाली सिख बीबी के मन में लाहौर की स्मृतियाँ जीवित हैं। वे लाहौर को अपना वतन मानती हैं और सफिया से वहाँ का नमक लाने का आग्रह करती हैं। उनके लिए नमक सामान्य खाद्य वस्तु नहीं, अपनी मिट्टी, पुराने जीवन और आत्मीय संबंधों की निशानी है। राजनीतिक सीमा बन जाने से उनका भावनात्मक संबंध समाप्त नहीं हुआ।

चरण 2: सीमा पर दिखाई देने वाली आत्मीयता सफिया जब नमक लेकर आती है तो सीमा पर मिलने वाले अधिकारियों की बातचीत भी यही भाव प्रकट करती है। पाकिस्तानी अधिकारी को देहली की याद है और भारतीय अधिकारी सुनील दासगुप्त ढाका को अपना वतन मानता है और वहाँ के डाभ के पानी को याद करता है। अलग देशों में रहने के बावजूद उनके भीतर पुराने स्थानों की स्मृतियाँ और अपनेपन की भावना बनी हुई हैं। सिख बीबी की इच्छा जानकर नमक के प्रति उनका व्यवहार भी संवेदनशील हो जाता है।

चरण 3: कथन का आशय मानचित्र की लकीर प्रशासनिक अधिकार और नागरिकता बाँट सकती है, किंतु साझा संस्कृति, स्मृतियों और मानवीय स्नेह को मिटा नहीं सकती। कहानी यह नहीं कहती कि वास्तविक राजनीतिक विभाजन हुआ ही नहीं; उसका आशय है कि धरती और लोगों से जुड़े भावनात्मक रिश्ते सरकारी सीमाओं से अधिक गहरे होते हैं। नमक उन्हीं रिश्तों की सजीव कड़ी बनता है।

चरण 4: निष्कर्ष सिख बीबी और दोनों ओर के अधिकारियों का जन्मभूमि के प्रति लगाव सिद्ध करता है कि राजनीतिक बँटवारा लोगों की स्मृतियों, आत्मीयता और साझा सांस्कृतिक संबंधों को नहीं बाँट पाता।

त्वरित सुझाव: सामान्य राष्ट्रीय एकता की बात भर न लिखें; सिख बीबी के नमक और दोनों अधिकारियों की जन्मभूमि की स्मृति से तर्क पुष्ट करें।

12(ङ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए : लेखक ने कबीर तथा गांधीजी की तुलना शिरीष से किस आधार पर की है? स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हजारीप्रसाद द्विवेदी शिरीष में प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच कोमलता, मस्ती और अविचल जीवनशक्ति देखते हैं।
- कबीर और गांधीजी से तुलना का आधार बाहरी रूप नहीं, कठिन समय में भी अपने स्वभाव और आदर्शों पर टिके रहने की क्षमता है।

चरण 1: शिरीष का स्वभाव भीषण गर्मी और लू के बीच भी शिरीष फूलता रहता है। उसके फूलों की कोमलता कठोर मौसम के सामने नष्ट नहीं होती। लेखक को उसमें ऐसा अवधूत दिखाई देता है जो बाहरी परिस्थितियों से अनावश्यक रूप से विचलित हुए बिना अपनी सरसता और मस्ती बनाए रखता है। यह अनासक्ति संवेदनहीनता नहीं, परिस्थितियों पर आंतरिक विजय है।

चरण 2: कबीर से तुलना कबीर सामाजिक रूढ़ियों, पाखंड और विरोध के बीच भी निर्भीक तथा फक्कड़ बने रहे। उन्होंने बाहरी दबाव के कारण अपनी अनुभूति और सत्य का त्याग नहीं किया। शिरीष की तरह उनका व्यक्तित्व भी स्वतंत्र, अनासक्त और अपनी सहज मस्ती में स्थित था। कठोर परिवेश के बीच यह अविचलता और फक्कड़पन दोनों को जोड़ता है।

चरण 3: गांधीजी से तुलना गांधीजी हिंसा, घृणा और सांप्रदायिक तनाव के कठिन वातावरण में भी सत्य, अहिंसा और प्रेम के आदर्शों पर अडिग रहे। विपरीत परिस्थितियाँ उनके भीतर की करुणा और नैतिक शक्ति को समाप्त नहीं कर सकीं। जैसे प्रचंड ताप में शिरीष की कोमलता बनी रहती है, वैसे ही संकट के बीच गांधीजी की मानवीय संवेदना और लोककल्याण की साधना बनी रही।

चरण 4: निष्कर्ष लेखक ने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अनासक्त, अविचल और सरस बने रहने के आधार पर कबीर तथा गांधीजी की तुलना शिरीष से की है। कबीर का फक्कड़पन और गांधीजी का करुणामय नैतिक साहस इस तुलना को स्पष्ट करते हैं।

त्वरित सुझाव: तुलना में शिरीष की गर्मी सहने की क्षमता को कबीर के फक्कड़पन तथा गांधीजी के प्रेम और अहिंसा से अलग-अलग जोड़ें।

13. नवयुवकों के लिए विशेष उपयोगी जीवन-मूल्यों की दृष्टि से 'जूझ' कहानी की विवेचना कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव का आत्मकथात्मक पाठ शिक्षा पाने की तीव्र इच्छा और कठिन परिस्थितियों से संघर्ष का वृत्तांत है।
- नवयुवकों के लिए इसके केंद्रीय जीवन-मूल्य लक्ष्यनिष्ठा, श्रम, आत्मविश्वास, शिक्षा के प्रति लगन और सृजनशीलता हैं।

चरण 1: शिक्षा के लिए दृढ़ संकल्प कहानी का किशोर आनंद पढ़ना चाहता है, किंतु पिता उसे खेत के काम में लगाए रखना चाहते हैं। घरेलू और आर्थिक परिस्थितियाँ उसकी पढ़ाई में बाधा बनती हैं। वह इन्हें अपनी नियति मानकर स्वीकार नहीं करता। उसे विश्वास है कि शिक्षा से जीवन को नई दिशा मिल सकती है। यह प्रसंग युवाओं को सिखाता है कि लक्ष्य के प्रति स्पष्टता और दृढ़ इच्छा कठिन परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने की शक्ति देती है।

चरण 2: व्यावहारिक प्रयास और उत्तरदायित्व आनंद केवल इच्छा व्यक्त करके नहीं रह जाता, बल्कि पढ़ाई फिर शुरू करने का उपाय खोजता है। माँ और दत्ता जी राव के सहयोग से उसे विद्यालय जाने का अवसर मिलता है। साथ ही उसे खेती के काम की जिम्मेदारी भी निभानी पड़ती है। वह श्रम से भागे बिना पढ़ाई के लिए स्थान बनाता है। इससे धैर्य, समय के सदुपयोग और जिम्मेदारी निभाते हुए अपने अधिकार के लिए प्रयास करने का महत्त्व स्पष्ट होता है। उचित सहयोग लेना भी संघर्ष का उपयोगी साधन है।

चरण 3: उपहास के बीच आत्मविश्वास विद्यालय लौटने पर पुराने वस्त्रों और ग्रामीण स्थिति के कारण आनंद को संकोच तथा साथियों के उपहास का सामना करना पड़ता है। फिर भी वह पढ़ाई नहीं छोड़ता। अपनी लगन से धीरे-धीरे कक्षा में स्थान बनाता है। उसका अनुभव नवयुवकों को बताता है कि आर्थिक अभाव या दूसरों की हँसी को अपनी योग्यता का अंतिम निर्णय नहीं मानना चाहिए। आत्मसम्मान का आधार निरंतर प्रयास और सीखने की इच्छा होनी चाहिए।

चरण 4: गुरु का मार्गदर्शन और सृजनशीलता मराठी के अध्यापक सौंदलगेकर कविता को भावपूर्ण ढंग से पढ़ाते हैं। उनके प्रभाव से आनंद के भीतर कविता के प्रति आकर्षण और रचना की प्रेरणा जागती है। वह खेत के काम के बीच भी कविता गुनगुनाता और नई पंक्तियाँ सोचता है। इस प्रकार कठिन जीवन के बीच उसकी कल्पना विकसित होती है। पाठ युवाओं को अच्छे मार्गदर्शन का सम्मान करने और अपनी रचनात्मक प्रतिभा को अभ्यास द्वारा विकसित करने की प्रेरणा देता है।

चरण 5: निष्कर्ष 'जूझ' नवयुवकों को सिखाती है कि शिक्षा के प्रति लगन, कठोर परिश्रम, आत्मविश्वास, सहयोग और सृजनशीलता से बाधाओं का सामना किया जा सकता है। आनंद का संघर्ष बताता है कि जीवन को बेहतर बनाने के लिए निराश होने के स्थान पर निरंतर कर्म और सीखने की प्रवृत्ति आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: जीवन-मूल्य गिनाने के साथ प्रत्येक को आनंद के किसी ठोस अनुभव—पढ़ाई, खेत के श्रम, उपहास या कविता की साधना—से जोड़ें।

14(क). महायुद्ध की विभीषिका के संदर्भ में ऐन फ्रेंक की डायरी को जीवंत दस्तावेज़ क्यों माना जाता है? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रेंक की डायरी द्वितीय विश्वयुद्ध और नाज़ी अत्याचारों को एक यहूदी किशोरी के निजी अनुभवों के माध्यम से सामने लाती है।
- जीवंत दस्तावेज़ में ऐतिहासिक परिस्थिति के साथ मनुष्य के भय, आशा और दैनिक संघर्ष का प्रामाणिक चित्र मिलता है।

चरण 1: युद्ध और यहूदी उत्पीड़न का प्रत्यक्ष अनुभव ऐन फ्रेंक की डायरी केवल युद्ध की घटनाओं का विवरण नहीं है। इसमें नाज़ी शासन के कारण यहूदियों के जीवन पर आए संकट और उनके मूल अधिकारों के हनन का अनुभव दर्ज है। अपने ही समाज में असुरक्षित बना दिया जाना, गिरफ्तारी का निरंतर भय और सामान्य जीवन से वंचित होना युद्ध की अमानवीयता को स्पष्ट करते हैं। ऐन और उसके साथ रहने वाले लोगों का गुप्त आश्रय में छिपकर जीना बताता है कि युद्ध का प्रभाव रणभूमि से बहुत दूर तक पहुँचता है।

चरण 2: बंद जीवन की छोटी घटनाओं में बड़ी त्रासदी आश्रय में रहने वालों को बाहर की आहटों से डर लगता है। उन्हें अपनी गतिविधियों और आवाज़ों तक पर नियंत्रण रखना पड़ता है। भोजन और अन्य आवश्यक वस्तुओं का अभाव, सीमित स्थान तथा भविष्य की अनिश्चितता

आपसी तनाव बढ़ाते हैं। इन स्थितियों का दैनिक विवरण पाठक को उस वातावरण में पहुँचा देता है। युद्ध यहाँ सैनिकों की विजय या पराजय की सूचना नहीं, बल्कि साधारण मनुष्यों से स्वतंत्रता, सुरक्षा और सहज आनंद छीन लेने वाली वास्तविकता बनकर उपस्थित होता है।

चरण 3: किशोरी की संवेदना और मानवीय आशा ऐन भय के बीच भी अपने मन की जिज्ञासाएँ, अकेलापन, संबंधों की उलझनें और भविष्य के सपने व्यक्त करती है। वह प्रकृति, प्रेम और स्वतंत्र जीवन की इच्छा रखती है। उसकी संवेदना बताती है कि उत्पीड़ित व्यक्ति केवल आँकड़ा नहीं, अपनी आकांक्षाओं वाला जीवित मनुष्य है। डायरी में भय के साथ आशा तथा बाहरी संकट के साथ भीतर के विकास का अंकन उसकी प्रामाणिकता बढ़ाता है। घटनाओं के बीच लिखे गए ये निजी अनुभव इतिहास को मानवीय चेहरा देते हैं और पाठक में युद्ध तथा नस्ली घृणा के विरुद्ध संवेदना जगाते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार ऐन फ्रेंक की डायरी महायुद्ध की विभीषिका का जीवंत दस्तावेज़ है, क्योंकि उसमें यहूदी उत्पीड़न, छिपे हुए जीवन की घुटन और एक किशोरी की अविचल मानवीय आशा प्रत्यक्ष अनुभवों के रूप में सुरक्षित हैं। वह युद्ध के इतिहास के साथ उसके मानवीय दुष्परिणाम भी सामने लाती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ गुप्त आश्रय के दैनिक भय और ऐन की आशाओं के उदाहरण अवश्य जोड़ें।

14(ख). 'आधुनिकता' के प्रति यशोधर पंत और उसकी पत्नी के दृष्टिकोण का अंतर सोदाहरण समझाइए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी 'सिल्वर वैडिंग' बदलते पारिवारिक मूल्यों और पीढ़ियों के अंतर को यशोधर पंत के अनुभव से सामने लाती है।
- आधुनिकता के प्रति दृष्टिकोण का अंतर नए रहन-सहन, पारिवारिक उत्सवों और बच्चों की जीवनशैली पर पात्रों की प्रतिक्रियाओं से स्पष्ट होता है।

चरण 1: यशोधर पंत की परंपरा से जुड़ी दृष्टि यशोधर पंत पुराने संस्कारों, सादगी और आत्मीय सामाजिक संबंधों को महत्त्व देते हैं। किशनदा की जीवन-पद्धति और उनसे मिले मूल्य उनके व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव रखते हैं। बदलते परिवार में वे आधुनिक व्यवहार को सहजता से स्वीकार नहीं कर पाते। नई बातों पर उनका 'समहाउ इंप्रॉपर' अनुभव करना उनके इसी असमंजस का परिचायक है। उनके लिए किसी व्यवहार का मूल्य केवल नया या सुविधाजनक होने से तय नहीं होता; वे उसे अपने संस्कारों और उचित आचरण की कसौटी पर भी परखते हैं।

चरण 2: विवाह की वर्षगाँठ और बच्चों से संबंध का उदाहरण विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ को 'सिल्वर वैडिंग' के रूप में मनाने का आयोजन यशोधर बाबू को अपना परिचित पारिवारिक उत्सव नहीं लगता। बच्चों का ढंग, पार्टी का वातावरण और प्रदर्शनप्रिय रहन-सहन उन्हें असहज करते हैं। बेटे द्वारा दिया गया ड्रेसिंग गाउन भी उनके लिए केवल आधुनिक सुविधा का प्रश्न नहीं रह जाता। उसके साथ सुबह दूध लाने की बात जुड़ने पर उनके मन में पिता के प्रति अपेक्षित आत्मीयता का प्रश्न उभरता है। इस प्रकार आधुनिक वस्तुओं के बीच भी वे संबंधों की संवेदनशीलता और अपने स्थान को लेकर चिंतित रहते हैं।

चरण 3: पत्नी का समय के साथ बदलने वाला दृष्टिकोण उनकी पत्नी भी मूलतः परंपरागत परिवेश से आई हैं, परंतु बच्चों के बड़े होने पर उनकी जीवनशैली को अपनाने के लिए अधिक तैयार हैं। वे बच्चों के उत्साह, नए पहनावे और वर्षगाँठ के आयोजन में सहजता से सहभागी बनती हैं। यशोधर बाबू जिस परिवर्तन से दूरी अनुभव करते हैं, पत्नी उसी के माध्यम से बच्चों के निकट रहती हैं। वे पति की तरह हर नए व्यवहार को पुराने मानदंडों से जाँचकर अस्वीकार नहीं करतीं। इससे घर के बदलते वातावरण के साथ उनका तालमेल अधिक दिखाई देता है। यह अंतर पति को अपने ही परिवार में कुछ अकेला भी अनुभव कराता है।

चरण 4: निष्कर्ष यशोधर पंत आधुनिकता को परंपरा, सादगी और संबंधों की गरिमा की कसौटी पर परखते हैं; इसलिए उसके अनेक रूप उन्हें असहज करते हैं। उनकी पत्नी बच्चों की बदलती दुनिया के अनुरूप स्वयं को ढाल लेती हैं। वर्षगाँठ की पार्टी और नए रहन-सहन के प्रति दोनों की प्रतिक्रियाएँ इस अंतर को स्पष्ट करती हैं।

त्वरित सुझाव: दोनों पात्रों का अंतर स्पष्ट करने के लिए वर्षगाँठ की पार्टी जैसा साझा प्रसंग लेकर उनकी अलग प्रतिक्रियाएँ लिखें।